अध्याय 15

पुनरुत्थान का अर्थ

आधुनिक धार्मिक संशयवाद पूछता है, "क्या कोई चेतना संभाले हुए मृत्यु से बच सकता है?" न तो पौलुस और न ही कुरिंथुस वासियों ने यह प्रश्न पूछा। यहूदियों एवं यूनानियों के बीच प्रचलित लोकप्रिय धर्म का अनुमान है कि व्यक्तिगत चेतना के द्वारा शारीरिक मृत्यु से बचा जा सकता है। पौलुस की चिंता अधिक विशिष्ट थी। उसके अनुसार जो मसीह में मरते हैं, वे प्रभु के साथ परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य में सदेह वास करेंगे। मुख्य आकर्षण सदेह है। "पुनरुत्थान" शब्द का यही अर्थ है कि जो देह कब्र में पड़ी है वह ठीक उसी तरह जी उठेगा जिस तरह यीशु कब्र में से बाहर निकलकर आया था।

लोकप्रिय यूनानी धर्म से पौलुस की राय इस बात पर अलग थी जब उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्रभु का पुनरागमन और मसीही युग का अंत शारीरिक पुनरुत्थान के साथ होगा। उसी समय, उसने इस बात का भी विभेद किया पुनरुत्थित देह शारीरिक देह से भिन्न होगा (15:42, 43)। प्रेरित ने इस बात का दावा नहीं किया कि उसके पास पुनरुत्थान से संबंधित सभी प्रश्नों का उत्तर है; परंतु उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि आत्मा, अभौतिक "देह" पुनरुत्थान के विचार के विपरीत होगा।

जबकि यूनानी धर्म इस विचार धारा से कि मरणहार मृत्यु से बचेंगे के विरूद्ध नहीं था, परंपरागत यूनानी विचारधारा, पौलुस के यहूदी समकालीन विचारधारा से भिन्न था। दी ओडीसी के नायक मुरदों का सामना करता है, जिनके बारे में यह कहा गया है कि वे "एक लंबी निराशा भरी रात में रहते हैं।"[1] ओडिसियस ने भूतों और मरणहारों के बलिदानों को चाहने वाले परछाइयों के दुःखद दृश्य का सामना किया। सूर्य की रोशनी और बरसातों वाली संसार में लगभग सभी लोगों को नरक (ᾅδης, *हेडेस*), मृतकों के स्थान, की छायांकित साम्राज्य का अनुभव करना पड़ता है। जबकि इब्रानी भाषा שְׁאוֹל *(सिओल)* का पुराने नियम में अलग-अलग भेद हैं, यहेजकेल ने मृतकों के वास, *हेडेस* को यूनानी विचार धारा के विपरीत प्रस्तुत किया है। यह एक अंधकारमय स्थान है जहाँ मूर्तिपूजक राजा और उनके सेना, धर्मी लोगों द्वारा नरसंहार किए जाने के बाद चले गए (यहेजकेल 32:18-21)। पौलुस ने घोषणा किया कि पुनरुत्थित जीवन सुदृढ़ होगा और उसी समय यह इस युग के दुःख व अनिश्चितता के आधीन नहीं होगा।

सदियों से, यूनानी लोग विदेशों से लाए गए नए देवी-देवताओं को अपने देवगणों में सम्मिलित करने के आदि हो चुके थे। यहूदियों के परमेश्वर के साथ ऐसा करने में उन्हें कठिनाई हो रही थी। यीशु मसीह के पिता यूनानी देवगणों के समान नहीं है उसने स्वयं परमेश्वर होने का दावा किया। जो अधिकांश यूनानियों के लिए यह अपमानजनक था। वे यहूदियों को उनके परमेश्वर के बारे में दावे के कारण अत्यधिक घमण्डी समझते थे।

कुछ कुरिंथुस मसीही लोग जो यूनानी पृष्ठभूमि से आए थे उनके लिए इन यूनानी देवी-देवताओं को त्यागना आसान नहीं था। वे अपने पुराने समाज व जीवन का पूर्णरूप से परित्याग नहीं करना चाहते थे, जिसमें मंदिरों में बलिदान चढ़ाना और भोजन करना महत्वपूर्ण होता था (8:9, 10; 10:14)। जब यूनानी देवी-देवताओं के प्राचीन उपासकों ने मसीह को प्रभु मानकर अपनाया, तो उन्होंने समझा कि एकेश्वरवाद नये समर्पण के साथ प्रारंभ हुआ; लेकिन उनके लिए यूनानी दार्शनिक विचार धारा छोड़ना अत्यंत कठिन हो गया था। यह उनके विचार धारा में बारीकी से जुड़ गया था जिससे छूटने में उन्हें कठिनाई हो रही थी। मृत्यु के पश्चात जीवन का विचार उस विचारधारा के लिए महत्वपूर्ण था। मृत्यु पश्चात जीवन की विचार धारा में यूनानियों और मसीही लोगों के बीच टकराव अपरिहार्य था।

पहला कुरिंथियों 7:1 से प्रारंभ करके, पौलुस ने उन प्रश्नों का उत्तर देना प्रारंभ किया जिनको कुरिंथुस की कलीसिया ने पत्री के माध्यम से उससे पूछा था जो उन्हीं के तीन सदस्यों ने उसे पहुँचाई थी (16:17)। उसने उनके अलग-अलग प्रश्नों का परिचय "अब उन बातों के विषय" वाक्यांश से बताना प्रारंभ किया (7:1; 8:1; 12:1)। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित अब अपने अंतिम प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार था जिसे कुरिंथुस के लोगों ने पूछा था; यह मरे हुओं के जी उठने के संबंध में है। इस प्रश्न की महत्वपूर्ण बात यह है कि पहले जैसा परिचय दिए बिना, पौलुस इसका उत्तर देने के लिए जल्दबाज़ी करता है।

दूसरी संभावना यह है कि उसने यह वाक्यांश इसलिए छोड़ दिया होगा क्योंकि जो पत्री उसे कुरिंथुस के मसीही लोगों से मिला था, उसमें पुनरुत्थान के विषय पर कोई प्रश्न नहीं था। ऐसे स्थिति में, प्रेरित ने खलोए के घराने से इस विषय पर कुरिंथुस में व्याप्त विभिन्न विचारधारा के बारे में सुना होगा (1:11), या उन तीन व्यक्तियों से जो उसके पास पत्री लाए थे या फिर किसी अन्य स्रोत से उसने इस विषय पर सुना होगा। फिर भी, इन समस्याओं को अध्याय 7 से लेकर आगे के अध्यायों में क्रमबद्ध तरीके से संबोधित करने से ऐसा लगता है कि पुनरुत्थान के बारे में प्रश्न भी उन्हीं प्रश्नों में सम्मिलित था जो उन्होंने उससे पूछा था।

मसीह जी उठा है (15:1-11)

[1]हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ,

जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। 2उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। 3इसी कारण मैं ने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, 4और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, 5और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। 6फिर वह पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत से अब तक जीवित हैं पर कुछ सो गए। 7फिर वह याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। 8सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ। 9क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था। 10परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था। 11इसलिये चाहे मैं हूँ, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया।

पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि मसीह में विश्वास यह भरोसा जगाता है कि वह मृतकों में से जी उठा है और वह पुनः आने वाला है। स्वयं मसीह का पुनरुत्थान इस बात की निश्चितता है कि जिनका उसने उद्धार किया है वह कब्र से भी बाहर निकलेंगे (15:20)। जब वह दोबारा प्रगट होगा तो जो लोग मसीह में मरे हैं वे जी उठेंगे और शारीरिक रूप में अनंत जीवन के प्रतिभागी होंगे। प्रकाशन यह है कि शरीर में जी उठे बिना उद्धार नहीं है। यह ऐसी सत्य है जो मसीहियत के लिए मील का पत्थर है। उसका ईश्वरत्व और उसकी मृत्यु इसी के द्वारा स्थाई रूप से ठहराया जाता है। इस सच्चाई के साथ समझौता नहीं किया जा सकता है। यह एक ऐसा मील का पत्थर है जिसका मसीही लोगों को दृढ़ता से समर्थन करना चाहिए।[2]

आयत 1. पौलुस और उसके सहयोगियों ने **सुसमाचार** की मूलभूत सच्चाई जो उन्होंने कुरिंथुस में **सुनाया** था, उसमें यह शिक्षा दी गई थी कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाकर अपने दाहिने हाथ राज्य करने के लिए बैठाया और यह कि यीशु किसी दिन वापस लौटकर आएगा। प्रेरित ने शालीनता से अपनी शिक्षा रखी। मृतकों के पुनरूत्थान के बारे में चर्चा करने की आरंभिक बात यह थी कुरिंथुस वासियों को यह स्मरण दिलाना था कि उन्होंने एकलौते परमेश्वर पर विश्वास किया है जिसने अपने आपको अपने पुत्र यीशु मसीह में प्रकट किया था। उनका उद्धार इसलिए हुआ है क्योंकि वे पौलुस के संग **खड़े** थे; जो सुसमाचार उसने सुनाया था उसको उन्होंने अपनाया था (τὸ εὐαγγέλιον ὅ εὐηγγελισάμην ὑμῖν, *टो यूआंगलियोन हो यूवेंगेलिसामेन ह्यूमिन*, "the gospel which I preached to you")। प्रेरित का संदेश अटल था; यह

यूनानी धार्मिक विचार धारा से सहमत नहीं होता था। जब यीशु का पुनरागमन होगा तो एक आम पुनरुत्थान होगा और उसके बाद जीवित और मरे हुओं का न्याय किया जाएगा (देखें 2 कुरिंथियों 5:10)। पौलुस ने कुरिंथुस के अपने संगी विश्वासियों का ध्यान उस बंधन की ओर आकर्षित किया जिसके द्वारा वे एक आम आशा और उद्देश्य से एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं।

पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि मृतकों के पुनरुत्थान पर प्रश्न चिह्न लगाने का अर्थ, मसीही विश्वास के साथ समझौता करना था। जिन्होंने मृतकों के पुनरुत्थान का इनकार किया वे किसी छोटी बात या छोटी विचार धारा पर चर्चा नहीं कर रहे थे; उनका संदेह परमेश्वर के राज्य की नींव को ढाने जैसा था। आज के समान, मसीही लोग तब भी, इस मूल विश्वास पर अडिग थे कि यीशु नासरी ही पूर्वकाल से बहु प्रतीक्षित मसीह थे। परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाकर, जो सो रहे हैं उनमें प्रथम फल ठहराकर, यह घोषणा किया कि यीशु उसका पुत्र है (रोमियों 1:4; 1 कुरिंथियों 15:20)। सभी मानव जाति के लिए यीशु परमेश्वर से मेल-मिलाप कराने का द्वार है। क्योंकि अब उसका कब्र खाली है तो शारीरिक पुनरुत्थान पहले ही प्रारंभ हो चुका है। एक तरीके से, मसीही लोगों ने मृतकों की पुनरुत्थान के साथ सहभागिता करना प्रारंभ कर दिया है। पुनरुत्थान का इनकार करने का तात्पर्य मसीह में विश्वास करने से इनकार करना है।

आयत 2. अटपटा सा यूनानी वाक्यांश (τίνι λόγῳ εὐηγγελισάμην ὑμῖν εἰ κατέχετε, *टीनी लोगो यूवेंगेलिसामेन ह्यूमिन एई काटेखेटे,* "उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो" 15:2), के साथ पौलुस ने कुरिंथुस वासियों को स्मरण दिलाया कि जो संदेश उसने उन्हें सुनाया था उसके द्वारा उनका उद्धार हुआ है। छुड़ाए हुओं के बीच उनका जीवन उनके विश्वास के अंगीकार पर निर्भर करता है। पौलुस ने सच्चाई की घोषणा कर अपना कार्य पूर्ण कर लिया था। मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उन्होंने अपना कार्य पूरा किया। यदि वे अपने विश्वास पर बने नहीं रहेंगे तो उन्होंने मिलकर जो नींव डाली थी वह गिर जाएगी। कुछ मसीही विश्वासियों को कुछ विरोधी ताकत उनको मनों में यह संदेह उत्पन्न कर कि मृत्यु के बाद शारीरिक जीवन संभव नहीं है, भड़का रहे थे। जब तक कि वे अपने विश्वास में बने नहीं रहते हैं तो मसीह में उनकी आशा पूरी नहीं होगी; उनका **विश्वास करना व्यर्थ ठहरेगा।** जिस सुसमाचार के कारण उनका उद्धार हुआ है उससे मृतकों के पुनरुत्थान की पुष्टि हुई है। जो सुसमाचार पौलुस ने सुनाया उसके द्वारा उनका उद्धार हुआ है; उन्होंने उसके संदेश पर विश्वास किया था। शारीरिक पुनरुत्थान सुसमाचार के लिए प्रासंगिक नहीं था; यह तो इसका केन्द्र था।

आने वाले दशकों में, यूनानी विश्वासियों ने देह की पुनरुत्थान के संबंध में अलग-अलग तरीके से लगातार संघर्ष करते रहे। कुछ लोगों का मानना था कि मसीही बनने के बाद, उन्होंने मृत्यु से आत्मिक, अभौतिक पुनरुत्थान प्राप्त कर लिया है। यह इसलिए था क्योंकि संभवतः उन्होंने पौलुस के कुछ शिक्षाओं को गलत समझा था (उदाहरण रोमियों 6:4)। उनमें से कुछ लोगों ने हुमिनयुस और

फिलेतुस जैसे शिक्षकों की शिक्षा पर विश्वास किया था जिनके अनुसार पुनरुत्थान पहले ही हो चुका था (2 तीमुथियुस 2:17, 18)। उनके मतानुसार बपतिस्मा के द्वारा पाप की मृत्यु से जी उठने के कारण, उनकी आत्मा अब स्वर्ग में वास करेगी; लेकिन शारीरिक जीवन इस धरती के लिए आरक्षित है। स्पष्ट रूप से, कोई भी कुरिंथुस में पौलुस के शिक्षा से इतना दूर नहीं हुआ था; परंतु उनमें से कुछ लोग यह समझने में संघर्ष कर रहे थे कि आत्मिक जगत में पुनरुत्थित देह कैसे वास करेगी। हुमिनयुस और फिलेतुस के झूठे शिक्षा की बीज पहले ही बो दी गई थी।

आयत 3. कुरिंथुस के भाइयों एंव बहनों के लिए, पौलुस ने मसीही विश्वास का प्राथमिक विषय, पाप अंगीकार, जो आरंभिक बात है, की नेंव डाल दी थी। उसके शब्द, नये नियम में पाए जाने वाले विश्वास की घोषणा का सार प्रस्तुत करता हैः मसीह का सुसमाचार। जिस तरह से व्यवस्थाविवरण 26:5-9 में इस्राएलियों के लिए पाप अंगीकार का आधारभूत विषय था,[3] उसी तरह मसीही लोगों का विश्वास यह है कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा, गाड़ा गया, और परमेश्वर की सामर्थ से मृतकों में से जिलाया गया। वाक्यांश ἐν πρώτοις (*एन प्रोटोइस*) को "सर्वप्रथम" भी समझा जा सकता है (KJV; NKJV; ASV), परंतु पौलुस का विश्वास की मूलभूत सच्चाई पर ज़ोर यह सुझाव **जैसे कि प्रथम महत्वपूर्ण (as of first importance;** NASB; NIV; NRSV; ESV) प्रस्तुत करता है। प्रेरित ने कुरिंथुस वासियों को बताया कि उसने उन्हें वही बात पहुँचा दी **जो उसको पहुँची थी।** पौलुस ने किससे संदेश "प्राप्त" किया था? गलातियों 1:11, 12 में इस बात पर ज़ोर दिया कि जो सुसमाचार उसने सुनाया था वह उसे मनुष्य से नहीं मिला था। उसके बाद भी, पौलुस ने मृतकों में से जी उठे मसीह की गवाही, प्रेरितों से और दूसरे विश्वासियों से, जो उससे पहले चले गए थे, सुनी थी और उसे स्वीकार किया था। वह इस बात से अवगत था कि यदि उसका संदेश, उसके मन परिवर्तन से पहले सुनाया गया संदेश से भिन्न पाई जाती है तो यह उसके प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लगाएगा। पौलुस चाहता था कि कुरिंथुस वासी यह जाने कि जो संदेश उसने उन्हें सुनाया है वह प्रेरितों की गवाही है जो यीशु के पुनरुत्थान के आँखों देखे गवाह थे। उसने उसी संदेश पर विश्वास किया था जिस पर अन्य प्रेरितों ने भी विश्वास किया था: कि मसीह की मृत्यु मनुष्यों के पापों से छुड़ौती के लिए है (1 कुरिंथियों 15:3)। यह पुराने नियम में पाए जाने वाले मसीह की मृत्यु के बारे में की गई भविष्यवाणी की परिपूर्णता थी।

जब पौलुस ने लिखा कि उसका संदेश **पवित्रशास्त्र के अनुसार** था, उसके प्रथम पाठकों को यह समझना चाहिए था कि पवित्रशास्त्र से उसका तात्पर्य पुराने नियम से था। पवित्रशास्त्र इस बात को प्रमाणित करता है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान "परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान" के अनुसार था (प्रेरित 2:23)। जब पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए भेजा तो वह न तो उसे उसके किसी अपराध के कारण और न ही मनुष्यों के योजना के

अनुसार भेजा था। संभवतः पौलुस के मन ऐसा कोई विशिष्ट वचन उस समय नहीं था कि जो यह गवाही दे कि मसीह को दुःख उठाना है; लेकिन ऐसे कई ढेर सारे वचन हैं (उदाहरण के लिए देखें, यशायाह 53)।

पौलुस की शिक्षा का सार भी वही था जो उससे पहले वालों ने प्रचार किया था। उसने गलातियों की पत्री में इस बात का कोई दावा प्रस्तुत नहीं किया कि उसकी शिक्षा अन्य प्रेरितों से भिन्न है। उसको मसीह से प्रकाशन मिला था कि सुसमाचार अन्य जातियों के साथ-साथ यहूदियों के लिए भी है, और यह इसी बात के कारण कुछ लोगों ने, जिन्होंने गलातिया तक उसका पीछा किया था, विरोध किया। उसका मूलभूत संदेश वही था जो उसने अपने से पहले कलीसिया के खम्भों से सुसमाचार के अंगीकार के बारे में सुना था, लेकिन यीशु ने उसे यहूदियों एवं अन्य जातियों को सुसमाचार सुनाने के लिए नियुक्त किया (देखें गलातियों 1:16)।

आयत 4. पौलुस की शिक्षा का कोई भी भाग इस मुख्य सच्चाई का अग्रगामी नहीं हो सकता है कि यीशु मरा, **और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।** सभी बातें उसके पश्चात प्रवाहित हुई। यह सच्चे समय में सच्ची घटनाओं पर आधारित विश्वास का अंगीकार है, और कोई रहस्यवादी अनुभव या मिथ्या की अभिपुष्टि नहीं है। कोई भी आयुर्विज्ञान की परिभाषानुसार गाड़े जाने का अर्थ यह हुआ कि यीशु मर गया है। लूका ने यीशु के गाड़े जाने के संबंध में जो बातें लिखी, वह सबसे महत्वपूर्ण है: उसने चुने हुए गवाहों के सम्मुख "बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया" (प्रेरित 1:3)।

यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है कि पौलुस का इससे क्या तात्पर्य है कि जो पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी वह हो गया है। **पवित्रशास्त्र के अनुसार** का पुष्टीकरण हो सकता है कि "वह तीसरे दिन मृतकों में से जिलाया गया," या फिर यह पूरे वक्तव्य के लिए है कि वह गाड़ा गया और "तीसरे दिन जी उठा," के लिए प्रयोग हुआ है। उसके गाड़े जाने के बारे में वर्णन प्रासंगिक जान पड़ता है; क्योंकि मुर्दे गाड़े जाते हैं। यीशु के गाड़े जाने के संबंध में पौलुस केवल शब्दों को जोड़ रहा था, जिसका वह पुष्टि कर चुका था। इसके साथ ही, पुराने नियम के बहुत कम संदर्भ ही यीशु का "तीसरे दिन जी उठने" के बारे में व्याख्या करता है। जबकि स्वयं यीशु ने योना के अनुभव और उसके साथ क्या हुआ के बीच एक तुलनात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया है (मत्ती 12:40), ऐसा प्रतीत होते हैं वह योना के साथ और स्वयं उसके साथ जो घटना घटी वह उसको वह टाइपोलोजीकल संदर्भ में प्रस्तुत कर रहा था। योना ने जो कुछ भी कहा वह मसीह का मृतकों में से तीसरे दिन उठने के बारे में संकेत नहीं देता है। पौलुस पुराने नियम के भविष्यवाणियों को मसीह के गाड़े जाने से संबंधित नहीं कर रहा था बल्कि वह तो उसे उसके पुनरुत्थान से संबंधित कर रहा था। यह प्रेरित 2:25-28 के वृतांत और उसके अपने पत्रियों से स्पष्ट है। प्रेरित ने अन्यत्र तीसरे दिन की भविष्यवाणी के पूर्ति के बारे में कुछ भी नहीं कहा।

आयत 5. पतरस के लिए पौलुस का मनपसंद नाम **कैफा** है। उसने पतरस को

अपने दो पत्रियों, गलातियों और 1 कुरिंथियों में वर्णित किया है। पौलुस ने उसे दो बार "पतरस" (गलातियों 2:7, 8) और आठ बार "कैफा" (1 कुरिंथियों 1:12; 3:22; 9:5; 15:5; गलातियों 1:18; 2:9, 11, 14) में संबोधित किया है। संभवतः पौलुस ने अरामी नाम को यूनानी नाम से अधिक प्राथमिकता दी है। पौलुस के पत्रियों के अलावा केवल यूहन्ना 1:42 में जल्दबाजी करने वाले प्रेरित को "कैफा" करके संबोधित किया गया है। शायद पौलुस, यीशु मसीह का पतरस को मृत्यु उपरांत प्रकटीकरण का संदर्भ दे रहा था जो लूका 24:34 में अंकित है, यद्यपि लूका ने प्रेरित को "शमौन" करके संबोधित किया है।

स्पष्टतया, यीशु का जो **बारहों** पर प्रगट होने के बारे में पौलुस ने इस आयत में उदधृत किया है वह लूका 24:36-43 और यूहन्ना 20:19-23 में उल्लेखित है, यद्यपि सभी बारह प्रेरित वहाँ उपस्थित नहीं थे। न तो यहूदा और न ही थोमा वहाँ उपस्थित थे। उसके बाद, प्रेरित ने पुनरुत्थित मसीह का प्रकटीकरण को दूसरों से संबंधित किया, और उनकी गवाही यीशु के विरासत का भाग बन गया।

सुसमाचारों के वृतांत में यीशु की कहानी का वर्णन करने के पश्चात, यीशु के निकटतम लोग केवल दो बार "बारह" कहलाए (प्रेरित 6:2 और यहाँ 1 कुरिंथियों 15:5 में)। किसी भी आयत में "प्रेरित" शब्द "बारह" के बाद नहीं लिखा गया है, यद्यपि तर्क संगत इस शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। यहूदा के स्थान मतिय्याह को नियुक्त करने के बाद वह "उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया" (प्रेरित 1:26)। निस्संदेह, हमें यह समझना चाहिए कि पिन्तेकुस्त के दिन पतरस "ग्यारह" अन्य प्रेरितों के साथ प्रचार कर रहा था (प्रेरित 2:14)।

प्रथम सदी की कलीसिया "प्रेरित" से क्या समझते थे? क्या यह शब्द उन बारह लोगों के लिए आरक्षित था जो यीशु के साथ व्यक्तिगत रूप से रहते थे (मत्ती 10:2; लूका 6:13)? कुछ सीमा तक नये नियम में "प्रेरित" शब्द का प्रयोग पर तकनीकी व वर्गीय भ्रम उत्पन्न होता है। वर्गीय भाव में, एक प्रेरित वह है जिसको व्यक्तिगत रूप से कोई कार्य/मिशन दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस, गलातियों 1:19 में प्रभु के भाई याकूब को कलीसिया के दूसरे अगुवों के संग "प्रेरित" समझता है। यहाँ यह शब्द उसके लिए उपयुक्त सिद्ध होता है क्योंकि वह यरूशलेम की कलीसिया में पतरस और यूहन्ना के संग उसी मिशन और अगुवेपन का भाग है (देखें गलातियों 2:9)। पौलुस और बरनबास अन्ताकिया की कलीसिया के प्रेरित थे, जिन्होंने उन्हें उनके मिशन के लिए भेजा (प्रेरित 13:1-3)। यीशु भी प्रेरित था (इब्रानियों 3:1) जिसमें परमेश्वर ने उसे मिशन दे दिया था। पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग वर्गीय रूप से उन भाइयों के लिए प्रयोग किया है जिन्हें उसने यहूदिया के गरीबों के लिए चंदा लेने के लिए भेजा था। NASB उन्हें "संदेशवाहक" ("messengers") संबोधित करता है (2 कुरिंथियों 8:23)।

प्रथम पिन्तेकुस्त को यीशु का मुरदों में से जी उठने के पश्चात और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से पहले, प्रेरितों ने आत्मा की अगुआई में अपनी संख्या बारह कर ली थी (प्रेरित 1:21-26)। ये बारह प्रेरित वे थे जो यीशु के साथ उसके

सेवकाई के आरंभ से थे और जिन्होंने पुनरुत्थित यीशु की गवाही दी थी। स्पष्टतया, "बारह" याकूब के बारह पुत्रों और इस्राएल के बारह गोत्रों के प्रतीक थे। फिर भी, जैसे-जैसे कहानी की परतें पलटती जाती है, प्रेरितों के काम की पुस्तक संख्या बारह को सीमित नहीं रखती है। जब यूहन्ना के भाई याकूब की हत्या हेरोदेस राजा के द्वारा किया गया, तो उसके स्थान पर किसी दूसरे को नियुक्त करने के विषय में यह पुस्तक शांत दिखाई देता है (प्रेरित 12:2)। पौलुस ने उन बारहों के समान प्रेरित होने का दावा किया है (1 कुरिंथियों 9:1; 2 कुरिंथियों 12:12; गलातियों 1:1), लेकिन उसने किसी के बदले में नियुक्त किए जाने का दावा नहीं किया है। इसके साथ ही, उसने यह भी माना कि उसकी अपनी विशेष प्रकार की प्रेरिताई है (1 कुरिंथियों 15:8-10)। लूका ने पौलुस को "प्रेरित" तब संबोधित किया जब वह बरनबास के साथ अंताकिया की कलीसिया में दूत था। ऐसा लगता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने "बारह प्रेरित" की उपाधि उन लोगों के लिए आरक्षित कर रखा था जो यीशु संग थे और जिन्होंने उसे मृतकों में से जी उठने के बाद देखा था।

जब पौलुस ने कलीसिया में अगुवेपन की भूमिका की सूची बनाई, तो उसके शब्द "परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित…" (12:28, 29; देखें इफिसियों 4:11)। प्रेरितों के काम की पुस्तक और कुरिंथियों की पत्री में "बारहों" का प्रयोग का इससे बढ़कर और कोई विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है कि यह प्रेरितों को संबोधित करने का एक सामान्य तरीका था। क्योंकि इस पद की अधिकार के कारण पौलुस का प्रेरित होने का दावा अपने आपमें महत्वपूर्ण है, और यह इसलिए नहीं है कि इससे कोई उच्च वर्गीय सम्मान जुड़ा हुआ है। पतरस या यूहन्ना के समान, जो भी पौलुस ने बोला और किया, उसमें परमेश्वर कार्य कर रहा था (1 कुरिंथियों 2:13; 2 कुरिंथियों 12:12)। आत्मा के अन्य आश्चर्यकर्म प्रकटीकरण के समान, यह भी नये नियम की आत्मा-प्रेरित गवाही और नये नियम के केनन की रचना के कारण ही सामने आया है। प्रथम सदी की कलीसिया को आत्मा द्वारा प्रेरित, प्रेरितों की अगुआई की आवश्यकता थी जो उसके बाद के कलीसियाओं को वैसे अगुवेपन की आवश्यकता नहीं थी।

आयत 6. केवल पौलुस ने ही इस घटना का विवरण किया है कि मृतकों में से जी उठे यीशु **पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया।** उसने कहा कि उनमें से अधिकांश अभी भी जीवित हैं, जबकि **कुछ सो गए** हैं। पौलुस ने मृत्यु को "सोना" कहा है (κοιμάω, *कोइमाओ*, 1 कुरिंथियों 7:39; 11:30; 15:18, 20; 1 थिस्सलुनीकियों 4:15)। ऐसा प्रतीत होता है कि सुसमाचार या प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णन किए बिना यीशु का मृतकों में से जी उठने के पश्चात ऐसी बड़ी भीड़ को दिखाई देना केवल यरूशलेम में ही हो सकता है। इस कारण बाइबल के विद्यार्थियों का मानना है कि जो घटना 1 कुरिंथियों 15:6 में उदधृत है वह गलील में ही हो सकती है, यद्यपि वे इसकी निश्चितता को स्वीकार करते हैं। यीशु का मृत्यु में से जी उठने के पश्चात गलील में प्रकट होना ने टीकाकारों को

सदैव आकर्षित किया है; पूरे व्याख्या का आधार इस परिकल्पना पर आधारित है कि एक बड़ी संख्या में यरूशलेम से लेकर गलील तक पुनरुत्थान पूर्व कलीसिया एकान्तवास किया करता था।[4]

मरकुस के अनुसार प्रभु ने प्रतिज्ञा किया कि वह उनसे गलील में मिलेगा (मरकुस 14:28; 16:7)। यह प्रतिज्ञा मत्ती में भी पाया जाता है और इस वृतांत के अनुसार यीशु उनसे गलील के एक पहाड़ में मिला (मत्ती 26:32; 28:16, 17)। लूका ने गलील में प्रकट होने के संबंध में कुछ भी नहीं लिखा है, लेकिन यूहन्ना ने लिखा कि यीशु ने शिष्यों को गलील की झील में मछली पकड़ते हुए पाया और उसने पतरस और "दूसरे शिष्यों" से बातचीत की (यूहन्ना 21:4-14)। 1 कुरिंथियों 15:6 में वर्णित घटना गलील में घटित हुआ हो या फिर न हुआ हो, पौलुस का पाँच सौ के बारे में गवाही निश्चित है। उसने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि उनमें से अधिकांश अब भी जीवित हैं। उनकी गवाही के बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। यदि कोई जो जीवित हैं उनसे पूछताछ करना चाहते हैं तो वे उनसे पूछ सकते हैं कि उन्होंने क्या देखा था।

आयत 7. केवल पौलुस ने ही **याकूब** पर प्रभु के प्रकट होने के बारे में लिखा है। याकूब निश्चित तौर पर प्रभु का भाई था (गलातियों 1:19)। यूहन्ना का भाई याकूब का देहांत पहले ही हो चुका था (प्रेरित 12:2), जबकि प्रभु का भाई याकूब यरूशलेम की कलीसिया में अगुवा बना (प्रेरित 12:17; 15:13; 21:18)। संभवतः याकूब और यहूदा का मन परिवर्तन, प्रभु के इस प्रकटीकरण का परिणाम था (प्रेरित 1:14)। प्रेरितों को प्रभु के दूसरा प्रकटीकरण का संदर्भ संभवतः यूहन्ना 20:26-29 या प्रेरित 1:1-9 है। जो विद्वान इस आयत में वर्णित **प्रेरितों** को 15:5 के "बारहों" से अलग स्थापित करना चाहते हैं तो ऐसे दावों का बाइबल कोई समर्थन नहीं करता है।

पुनरुत्थान के पश्चात प्रकटीकरण की यह सूची वृहत नहीं है। निश्चित रूप से पौलुस भी ऐसा करना नहीं चाहता था; प्रभु का पुनरुत्थान पश्चात दिखाई देने का उसने जो वर्णन किया है वह यीशु का मृतकों में से जी उठने को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है। सुसमाचार दूसरे शारीरिक प्रकटीकरण का वृतांत प्रस्तुत करता है जब महिला को खाली कब्र मिला था। उन लोगों के लिए जो इस घटना की ऐतिहासिक गवाही की सच्चाई को प्रयोगशाला में प्रमाणित करने तक सीमित करते हैं, ही यीशु का वास्तविक रूप से देह में मृत्यु के उपरांत जी उठने पर संदेह व्यक्त करते हैं।

आयत 8. पौलुस ने यीशु का उस पर प्रगट होने को दमिश्क का मार्ग (प्रेरित 9:3-6) में उसी तरह बताया जैसे वह अन्य शिष्य पर प्रगट हुआ था, यद्यपि उसमें भिन्नता थी। स्वर्गारोहण के बाद प्रभु पौलुस को तब दिखाई दिया था (प्रेरित 1:9); परंतु दूसरों को वह स्वर्गारोहण से पहले दिखाई दिया था। प्रभु को साक्षात् देखना प्रेरिताई की अर्हता थी (1 कुरिंथियों 9:1)। जबकि पौलुस ने यह माना कि मृत्यु में से जी उठने के बाद स्वयं उसका प्रभु को देखना और अन्य लोगों के देखने में भिन्नता है, उसने कहा कि उसने मृत्यु में से जी उठे मसीह को अन्य

लोगों के समान ही देखा था। इस बात का उसने ज़ोर देकर कहा कि यीशु ने उसे प्रेरिताई की पदवी **अधूरे दिनों का जन्मा** (ὡσπερεὶ τῷ ἐκτρώματι, *होसपेरेई टो एक्ट्रोमाटी)* के रूप में प्रदान किया था। उसका प्रेरितों की मण्डली का भाग होना सामान्य नियमावली के अंतर्गत नहीं था, परंतु उसने कहा कि दमिश्क के मार्ग की घटना उसे हर संदर्भ में प्रेरित बनाता है। विश्वास और व्यवहार के मामले में कलीसिया को उसे प्रेरिताई अधिकार प्राप्त प्रेरित के रूप में स्वीकार करना चाहिए था। इसका व्यवहारिक आशय यह है कि चाहे उसके द्वारा कलीसिया जो निर्देश व्यक्तिगत रूप से या फिर पत्री के माध्यम से दिया जाए, उसको प्रभु की ओर से स्वीकार करने करना चाहिए था।

पौलुस द्वारा अपने प्रेरिताई बुलाहट के संदर्भ में तकनीकी शब्द ἔκτρωμα (*एक्ट्रोमा*, "अधूरे समय का जन्मा") का प्रयोग को हमें कैसा समझना चाहिए? नये नियम में इस शब्द का प्रयोग केवल यहीं पर किया गया है, लेकिन प्राचीन यूनानी चिकित्सा साहित्य में इस शब्द का सामान्य प्रयोग था। गर्भपात के संबंध में इसका प्रयोग किया जाता था, अर्थात कोई ऐसी घटना जो समय से पहले हुआ हो।[5] किसी भी हिसाब से, प्रेरिताई के लिए पौलुस का बुलाहट समय से पहले नहीं था। इसके विपरीत, दमिश्क के मार्ग में यीशु का पौलुस को प्रेरिताई की पदवी बंद होने के पहले दिखाई दिया था।

पौलुस का इस उपमा का प्रयोग करने के पीछे साधारण विश्लेषण यह है कि वह अपने बुलाए जाने को एक संकुचित अवधारणा के रूप में केंद्रित करना चाहता था। न तो इस उपमा का और न ही किसी अन्य उपमा का विस्तृत समानता के लिए विश्लेषण किया जाना चाहिए। यूनानी शब्द *एक्ट्रोमा* अपेक्षित समय से पहले किसी बच्चे की आगमन को अभिहित करता है। पौलुस का मन परिवर्तन और प्रेरिताई, अपेक्षित समय क्रमानुसार नहीं था। इस प्रकार, वह "अधूरे दिनों" का जन्मा था। इस अलंकार का और अधिक विश्लेषण नहीं दिया जा सकता है।

एक दूसरा प्रश्न भी उठता है: पौलुस के यह लिखने का क्या तात्पर्य है, **सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया?** संभवतः अन्य जातियों का प्रेरित यह कहना चाहता था कि "सबके बाद" वह प्रेरितों के संग जोड़ा गया और उसके बाद किसी और को उसमें नहीं जोड़ा जाना था। दूसरी संभावना यह है कि "सबके बाद" नम्रता का अभिव्यक्ति है। अंतिम शब्द "मुझको भी" यूनानी शब्द κἀμοί *(कामोई)* का अनुवाद है जिसकी अभिव्यक्ति अविश्वास भी हो सकता है: "वह मुझ जैसे आदमी को भी दिखाई दिया" ("He appeared even to such a one as myself")। तीसरी संभावना यह है कि "सबके बाद" सूची को समाप्त करने के लिए एक वाक्यांश हो सकता है।

चूँकि पौलुस अपने प्रेरिताई अधिकार के अंतर्गत आत्मिक पुनरुत्थान की विचारधारा को बढ़ावा नहीं देना चाहता था, इसलिए एक नम्र "सबके बाद" मुश्किल से उचित जान पड़ता है। यदि पौलुस के अधिकार का दावा करने वाले पृष्ठभूमि पर ध्यान करें तो इसकी अधिक संभावना यह है कि वाक्यांश "सबके

बाद" इस ओर संकेत करता है कि उसका नाम प्रेरितों के सूची में जोड़े जाने के पश्चात यह सूची बंद हो गई होगी। किसी भी परिस्थिति में, वह एक प्रेरित था और इसलिए वह पुनरुत्थान के बारे में निर्णायक रूप से बोल सकता था।

आयत 9. पौलुस, यीशु के पुनरुत्थान के बाद दिखाई देने की प्रक्रिया को विश्वासियों का शारीरिक पुनरुत्थान के रूप में देख कर रहा था। मृत्यु में से जी उठे यीशु के बारे में स्वयं उसकी गवाही दमिश्क के मार्ग की घटना और उसके पश्चात उसका प्रेरित के रूप में नियुक्ति की संकेत करता है। फिर भी, 15:9-11 का मुख्य आकर्षण पौलुस का व्यक्तिगत अनुभव नहीं है; इसका मुख्य केन्द्र मृत्यु में से जी उठे मसीह का सदेह उपस्थिति है।

पौलुस अपने सेवकाई के दो स्पष्ट तथ्य के साथ समझौता नहीं करता है। प्रथम, उसका प्रेरिताई, बारहों के प्रेरिताई के क्रम में था। उसका प्रेरिताई का अधिकार उसे उनसे या किसी मनुष्य से नहीं मिला था (गलातियों 1:1); स्वयं प्रभु ने प्रेरित को सुसमाचार सुनाने के लिए नियुक्त किया था। द्वितीय, प्रेरित को अपने अयोग्य होने का ज्ञान था जिसे परमेश्वर ने अपनी महिमा के लिए उस पर लादा था। दूसरे शब्दों में, वह **प्रेरितों में सबसे छोटा था;** लेकिन उसकी नम्रता किसी गौण प्रतिष्ठा से नहीं उभरी थी। उसने अपने आपको सबसे निम्न इसलिए समझा क्योंकि उसने **कलीसिया को सताया था।** पौलुस इस बात को नहीं भूला पा रहा था, एक समय ऐसा भी था जब उसने मसीही लोगों की खोज करके उसने उन्हें मुकद्दमा और मार डाले जाने के लिए सौंपा था (प्रेरित 22:4; 1 तीमुथियुस 1:12-14)। उसे यह समझ आ गया था कि कलीसिया को सताने के द्वारा, उसने मसीह के विरूद्ध अपना क्रोध उण्डेला था (प्रेरित 9:4, 5)। यहाँ से जब उसने पीछे की ओर दृष्टि की तो उसे अपने जीवन का वह अन्धकारमय समय दिखाई दिया जब उसने मसीह का विरोध किया था।

इसलिए कि पौलुस एक अक्रामक यहूदी और कलीसिया का सताने वाला था, वह सकारात्मक प्रभाव के बिना नहीं था। उसके इस पृष्ठभूमि ने उसके कार्य के प्रति एक विस्तृत विश्वसनीयता प्रदान किया। मसीही लोगों के साथ आरंभिक मुठभेड़ के साथ ही पौलुस को सुसमाचार संदेश का आशय समझ में आ गया था। उसने हमेशा इस बात को समझा कि नासरी के अनुयायियों को यहूदी धर्म के चित्रपट में बांधे रखना असंभव है। यहूसी और अन्य जाति परमेश्वर के सामने एक समान थे, दोनों ने एक ही संदेश और एक ही मांग का सामना किया था। यहूदियों का कोई विशिष्ट दावा नहीं था। सुसमाचार संदेश का विरोध ने तरसुस के शाऊल को मार्ग के अनुयायियों को विनाश करने के लिए नकारात्मक ऊर्जा प्रदान किया था। यह जानने के पश्चात् कि अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर ने यहूदियों और अन्य जातियों को, बिना किसी भेदभाव के, एक साथ किया है तो पौलुस ने अपने तोड़ों का प्रयोग उसी कलीसिया को बनाने लगाया जिसे उसने पूर्वकाल में सताया था। तब परमेश्वर ने उसकी सहायता की कि उसके द्वारा सम्पूर्ण जगत में मसीह का संदेश सुनाया जाए। वह अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का प्रेरित बन गया।

आयत 10. प्रेरित ने अपनी सेवकाई के सार का आरंभ और अन्त परमेश्वर के अनुग्रह को अग्रिम रख कर किया। पौलुस ने अपने लिए कोई श्रेय नहीं लिया। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण ही वह अन्य प्रेरितों की तुलना में अधिक परिश्रम करने पाया था तथा अधिक फल अर्जित कर सका था। इस घोषणा का कि **मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया,** प्रत्यक्षतः तात्पर्य था कि उसने उन बारहों के सम्मिलित परिश्रम से भी अधिक परिश्रम किया था। एफ. एफ. ब्रूस ने इसे कुछ भिन्न देखा था। उसने कहा, "पौलुस ने, (ऐसा प्रतीत होता है) यीशु के मूल शिष्यों से बढ़कर अपने स्वामी के व्यक्तित्व और कार्य के विश्वव्यापी प्रभावों को समझा और उन्हें व्यावहारिक स्वरूप दिया।"[6] कुरिन्थियों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण था कि पौलुस उस प्रत्येक अभिप्राय में वैसा ही प्रेरित था जैसे कि उन बारहों में से कोई भी था। जो आदर उन मसीहियों का उसके वचन के लिए था वही मसीह के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता का आरंभ बिंदु था।

प्रेरित ने अपने परिश्रम का आकलन परमेश्वर के अनुग्रह के दृष्टिकोण से किया। उसने लिखा, **तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।** पौलुस को प्रेरित होने के लिए बुलाने के द्वारा परमेश्वर ने अनुग्रह किया था, और तरसुस के यहूदी ने उस बुलाहट का सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया था। उस पर हुआ परमेश्वर का अनुग्रह **व्यर्थ नहीं हुआ**, और पौलुस का यह विश्वास था कि कुरिन्थियों पर किया गया अनुग्रह भी व्यर्थ नहीं होगा (15:58)। परमेश्वर द्वारा पौलुस को नियुक्त किए जाने, और प्रेरित द्वारा आज्ञाकारिता के प्रत्युत्तर के कारण, परमेश्वर की मानवजाति के उद्धार की ईश्वरीय योजना इन भाइयों में पूरी हुई थी। पौलुस परमेश्वर द्वारा किए गए अनुग्रह के प्रस्ताव के प्रति भिन्न प्रतिक्रिया दे सकता था, जैसा कि अनेकों ने किया है। छुटकारा उनको मिलता है जो विश्वास तथा आज्ञाकारिता के साथ प्रतिक्रिया देते हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बचाने के लिए पहल की है।

आयत 11. पौलुस प्रभु द्वारा की गई उसकी नियुक्ति की स्वतंत्रता एवं उनके साथ खड़े होने को लेकर, जिन्हें प्रभु ने प्रेरित बनाया था, एक कोमल लीक पर चल रहा था। "वे" का पूर्ववर्ती "प्रेरित" है (15:9), जो कि "बारहों" (15:5) की संगत के समान था। **चाहे मैं हूं, चाहे वे हों,** पौलुस ने कहा, जिसने भी कुछ किया, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि सभी की प्रभु द्वारा दिए गए कार्य में भागीदारी थी। वे सभी एक ही सन्देश का प्रचार करते थे, उस ही का जिसे कुरिन्थियों ने विश्वास के साथ ग्रहण किया था। और कुछ होने से पहले यह सन्देश पुष्टीकरण था, एक अंगीकार था, नासरत के यीशु के संबंध में, जो एक ऐतिहासिक पुरुष था जिसे यरूशलेम में क्रूसित किया गया था। वह मर गया था, जैसा कि सभी मनुष्य मरते हैं; परन्तु परमेश्वर ने उसे कब्र में नहीं छोड़ा। तीसरे दिन, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया - उसे सदेह जीवित किया।

जो सन्देश कुरिन्थियों, पौलुस, और बारहों को एक साथ बांधता था वह निरर्थक होता यदि यीशु जिलाया नहीं गया होता। इन प्रारंभिक बातों को पीछे छोड़ते हुए, पौलुस कुरिन्थ के एक दूसरे विवाद का सामना करने के लिए तैयार

था। इससे अगले खण्ड में, उसने आने वाले युग में छुड़ाए हुओं के लिए परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए जीवन की गुणवत्ता को संबोधित किया।

एक खाली कब्र (15:12-19)

यीशु की पहचान के विषय परमेश्वर की व्यक्तिगत गवाही का, उसके ईश्वरत्व के समस्त अभिप्राय सहित, मृतकों में से उसका जी उठाना, समर्थन करता था (रोमियों 1:4)। पौलुस के कथनों की स्पष्टता होते हुए भी, सदेह पुनरुत्थान के लिए बाइबल की गवाही के साथ समझौता करने के प्रयास कभी समाप्त नहीं हुए हैं। विमुख आलोचक यह दिखाना चाहते हैं कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में किसी खाली कब्र का कोई उल्लेख नहीं किया है। ऐसा कहा जाता है कि, खाली कब्र की प्रथा, बाद में जोड़ी गई बात है। कुछ आलोचक कहते हैं, मसीही काल के आठवें दशक तक, जब सुसमाचार लेख लिखे जा चुके थे, खाली कब्र की प्रथाओं में समावेश हो चुका था। परन्तु, गंभीर जाँच प्रगट करती है कि पौलुस द्वारा खाली कब्र का उल्लेख न करना वाक्छल है, पौलुस की गवाही का गंभीर आकलन नहीं। वह मानता था कि यीशु का जी उठना, सदेह पुनरुत्थान था। इस विषय में उसे गलत नहीं समझा जा सकता है। *जब परमेश्वर ने यीशु की देह को जीवित किया, तो इसका प्रत्यक्ष अभिप्राय था कि वह कब्र जहाँ देह रखी गई थी खाली हो गई।*

पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को दी गई दलील में पुनरुत्थान के विषय तीन महत्वपूर्ण बिंदु थे। (1) जिस सन्देश का कुरिन्थ मसीहियों ने अंगीकार किया था, जिस सन्देश का पौलुस और अन्य प्रेरितों ने प्रचार किया था, वह यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने, और जी उठने का सन्देश था। (2) पुनरुत्थान सुसमाचार के साथ जोड़ा गया भाग नहीं था; वह उसका तत्व था। (3) यीशु के पुनरुत्थान का इनकार करने का अर्थ था इस बात का इनकार करना कि परमेश्वर ने अपने आप को मुक्तिदाता के रूप में प्रकट किया था। यीशु के पुनरुत्थान के बिना - यथार्थ, सदेह पुनरुत्थान - मसीही ऐसे दुस्साहसिक लोग थे जो एक मायावी विश्वास को थामने का प्रयास कर रहे थे।

[12]इसलिए जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने कैसे कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं? [13]यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। [14]और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। [15]वरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते। [16]और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। [17]और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। [18]वरन जो मसीह में

सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए। [19]यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।

आयत 12. सुसमाचार की मूलभूत बातों को दोहराने के पश्चात, पौलुस ने एक केन्द्रित उपयोगिता बताई। क्योंकि यीशु का पुनरुत्थान मसीही विश्वास की आरंभिक पुष्टियों में से एक है, एक ऐसा विश्वास जिसे प्रेरित और कुरिन्थ वासी भाई मानते थे, इसलिए यह कैसे संभव है कि उनमें से कुछ कह रहे थे **कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं?** कुछ यूनानी दार्शनिक यह मानते थे कि व्यक्ति की आत्मा और देह अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। उनका विचार था कि जब देहांत हो जाता है, तो कुछ शेष नहीं रहता है। किंतु कुरिन्थ वासी, प्रत्यक्षतः इतना आगे नहीं बढ़ गए थे कि इस जीवन के बाद के जीवन होने का भी खंडन करें। जब वे, किसी भी उद्देश्य से, मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते थे (15:29), तो उनमें प्रचलित यह बात उनके इस विश्वास की ओर संकेत करती थी कि मृत्यु के पश्चात कुछ तो है जो बच जाता है।

मृत्यु के पश्चात क्या होता है, इसकी विविध धारणाएँ यूनानी-रोमी संसार में पाई जाती थीं। वर्तमान व्याख्याकर्ताओं में पाया जाने वाला एक आम दृष्टिकोण है कि कुरिन्थियों में एक "आवश्यकता से अधिक युगांत संबंधी धारणा" व्याप्त थी, अर्थात, यह धारणा कि अन्त के समय से जुड़ा हुआ पुनरुत्थान हो चुका था। कुछ का यह कहना था कि इस बात पर विश्वास करना कि यीशु ही मसीह है और जिस जीवन की उसने शिक्षा दी थी उसे अपनाना ही "मृतकों में से जी उठाना था।" एक ज्ञानवादी विश्वासी ने, जो पौलुस से कम से कम सौ वर्ष पश्चात का था, लिखा, "जो यह कहते हैं कि पहले उनका देहांत होगा और फिर वे जी उठेंगे, वे भ्रांति में हैं। यदि जब वे जीवित हैं तब पुनरुत्थान को पहले से स्वीकार नहीं करते हैं, तो मृत्यु के पश्चात उन्हें कुछ नहीं मिलेगा।"[7] बाद में ज्ञानवाद में विभिन्न प्रकार के विश्वास सम्मिलित हो गए जिससे अनेकों प्रकार की परिकल्पनाएं आ गईं।[8] कुछ ज्ञानवादी यह मानते थे कि आने वाला युग आ चुका है और पुनरुत्थान हो चुका है (देखें 2 तीमुथियुस 2:18); परन्तु इसके कोई प्रमाण नहीं हैं कि ऐसे विचार प्रथम शताब्दी के मध्य में फल-फूल रहे थे, जब पौलुस जीवित था।

हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि कुरिन्थ में जो लोग शारीरिक पुनरुत्थान पर प्रश्न उठाते थे, वे क्या दलील देते थे। यूनानी विचारधारा, प्लूटो के बाद से देह और आत्मा में एक स्पष्ट भिन्नता रखती थी। यह माना जाता था कि आत्मा देह में फंस गई है। मृत्यु होने पर वह दुर्बल और भ्रष्ट भौतिक देह से स्वतंत्र होकर स्वर्ग की ओर उड़ जाएगी जहाँ वह एक प्रकार के विश्वव्यापी आत्मा में विलीन हो जाएगी। यूनानी दार्शनिक भौतिक देह और सद्गुणी आत्मा के मध्य कोई संगत नहीं देख पाते थे। इसकी तुलना में, पौलुस की देह और आत्मा के बारे में समझ पुराने नियम के प्रकाशन पर आधारित थी।

> पौलुस के अनुसार, देह और आत्मा के मध्य संबंध पूर्णतया सामान्य है, और आत्मा, देह के बिना एक नग्नावस्था में है। यह सत्य है कि पुनरुत्थान के समय

या मसीह के आगमन पर देह परिवर्तित हो जाएगी; वह परमेश्वर के राज्य के लिए अनुकूलित कर दी जाएगी। परन्तु किसी भी प्रकार से, पौलुस में पदार्थों में दुष्टता का कोई सिद्धांत नहीं है।[9]

बहुप्रचलित यूनानी विचारों, पदार्थों में दुष्टता विद्यमान है, के वर्णन या खंडन करने के विषय अपने आप को बाध्य समझे बिना, पौलुस ने यह कहा कि परमेश्वर ने यीशु को देह और आत्मा सहित कब्र में से जिला उठाया। यीशु का पुनरुत्थान इस बात की गवाही था कि देह और आत्मा की एकता निहित है। देह को इसलिए दुर्बल या दुष्ट नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि वह पदार्थ है। जीवन इस युग में देह/आत्मा के अनुभव है। बिना किसी प्रकार की सदेह, या भौतिक सीमाओं के बिना आत्मा का अस्तित्व कल्पना के बाहर है। इसके अतिरिक्त, यीशु का सदेह पुनरुत्थान इस बात की स्पष्ट और निश्चित गवाही थी कि जिन्होंने उसे मसीह मानकर स्वीकार किया था, वे भी उसी प्रकार के पुनरुत्थान के भागी होंगे। यह कहने के बाद कि यीशु मृतकों में से जी उठा था, पौलुस जानना चाहता था कि क्यों कोई यह तर्क देगा "कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं," अर्थात देह का जिलाया जाना नहीं है। यीशु के पुनरुत्थान के कारण, कब्र से आगे के अस्तित्व से संबंधित इस महत्वपूर्ण प्रश्न का समाधान हो जाना चाहिए था।

आयत 13. एक बार व्यक्ति प्रेरितों की गवाही को स्वीकार कर लेता है कि यीशु सदेह मृतकों में से जी उठा, फिर छुड़ाए हुओं के लिए स्वर्ग में सदेह जीवन के विषय कोई संदेह नहीं रहता है। इसके विपरीत, यदि नश्वर देह के मरने के पश्चात सदेह जी नहीं सकते हैं, तो फिर यीशु का भी पुनरुत्थान नहीं हुआ। जिन्होंने यीशु के सदेह जी उठने का खंडन किया उनके लिए इस तर्क से बचना असंभव था। उनका प्रमुख आधार था कि व्यक्ति के देहांत के पश्चात कुछ भौतिक शेष नहीं रहता है। वे इस लघु आधार का खंडन नहीं कर सकते थे कि यीशु की देह की मृत्यु हुई थी। जिस निष्कर्ष को स्वीकार करने के लिए उन्हें बाध्य होना पड़ रहा था वह था कि क्रूस पर यीशु का कोई भौतिक भाग जीवित बचा नहीं रहा। यदि वे सही थे, तो कब्र से बाहर भौतिक कुछ भी नहीं आया होगा; परन्तु पौलुस ने पहले ही पक्के प्रमाण प्रस्तुत कर दिए थे कि वह जी उठा था।

पौलुस के इस प्रकाशन में, यह स्पष्ट है कि यीशु ने मानवजाति की बातों को पूर्णतः भोगा था। उसकी एक देह थी। *यदि कब्र से परे कोई सदेह जीवन नहीं है, तो यीशु की देह जीवित हो नहीं सकती थी।* जो मृतकों के जीवित हो जाने का खंडन करते थे, उन्हें उनका सामना करना था जिन्होंने यीशु को कब्र में जाने के पश्चात देखा, छुआ, और उससे बातें की थीं, और फिर जो उन्होंने देखा था उसकी गवाही दी थी।

वह [पौलुस] अपने पाठकों को आज्ञा देता है कि वे मृतकों के जी उठने की प्रत्यक्ष दलील के खंडन पर मनन करें। जो यह खंडन करते हैं वे इस बात की अवहेलना करते हैं कि ऐसा तब ही सत्य हो सकता है जब इस बात की पुष्टि हो कि मृतकों में से कोई भी जी उठा नहीं हो सकता है। ऐसा है तो, स्वयं *मसीह,*

जो जीवित था, और मर गया, *वह फिर से जी नहीं उठा*; क्योंकि मृत्यु की विश्वव्यापी पहुँच में उसके लिए कोई अपवाद नहीं था। उसका अनुपम जीवन उसे समस्त मानवीय जीवन के अन्त से बचा कर नहीं रखा सकता था।[10]

आयत 14. पौलुस ने सशर्त वाक्यों के प्रयोग द्वारा एक निष्कर्ष से दूसरे पर जाकर अपनी दलील का और दबाव दिया। मसीह में बचाए हुओं का और स्वयं मसीह का पुनरुत्थान परस्पर जुड़े हुए हैं। "यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं" (15:13), तो यीशु जी नहीं उठा; परन्तु यदि यीशु जी नहीं उठा तो जो कुछ पौलुस ने प्रचार किया और जो भी कुरिन्थियों ने विश्वास किया, वह सब व्यर्थ था, मात्र एक झूठ था। प्रेरित ने सुसंगत होने का निवेदन किया। उसने दबाव दिया कि यदि कोई मृतकों के जी उठने का खंडन करता है, तो खंडन करने वाला अपनी दलील का उसके कड़वे अन्त तक पालन करने के लिए बाध्य है। मसीहियों का यह दावा कि यीशु कब्र से सदेह जी उठा और उनका इसपर आधारित भरोसा कि सभी छुड़ाए हुए सदेह जिलाए जाने के भागी भी होंगे, सुसमाचार प्रचार के लिए आधारभूत है। "यदि मसीह मृतकों में से जी नहीं उठा, तो परमेश्वर के अपने लोगों को छुड़ाने के कार्यों के लंबे मार्ग का अन्त एक बन्द गली, कब्र पर, जाकर हो जाता है।"[11]

आयत 15. मृतकों में से पुनरुत्थान का खंडन करने के अन्य तात्पर्य हैं। यदि पुनरुत्थान न होता, तो पौलुस और अन्य प्रेरित **परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे।** इस स्थिति में, हमें यह कहना पड़ेगा कि वे या तो धोखा खाए हुए और अज्ञानी थे, या फिर हमें उन्हें झूठे मानना पड़ेगा। ऐसे बहुत से प्रत्यक्ष दर्शन और बहुत सी गवाहियाँ थीं जिससे यह स्वीकार नहीं किया जा सकता था कि उनका उद्देश्य तो भला था परन्तु वे भ्रांति में थे। ठगी करने के लिए बहुत सावधानी से किए गए तालमेल की आवश्यकता थी। यदि कोई पुनरुत्थान हुआ ही नहीं था, तो पौलुस और अन्य प्रेरित "झूठे गवाह ठहरे।" उनकी गवाही थी कि यीशु जी उठा था। कुरिन्थियों को निर्णय करना था कि वे किस पर विश्वास करेंगे। दो दावे किए जा रहे थे: (1) मृतकों में से कोई सदेह पुनरुत्थान नहीं हुआ था, और (2) यीशु, मरे हुओं में से जी उठकर, शरीर में प्रकट हुआ था। पौलुस ने सही दलील दी कि इन दोनों कथनों में परस्पर सामंजस्य नहीं हो सकता था। क्या कुरिन्थ वासी वास्तव में इस बात पर विश्वास करते थी कि पौलुस और अन्य समझदार तथा भरोसेमंद लोगों ने यूँ ही झूठ बोल दिया था? वे क्यों अपना सबा कुछ उस बात के लिए दांव पर लगाते जिसे वे जानते थे कि झूठ है?

हाल की शताब्दियों में, उन धर्म शास्त्रियों के सामने, जो यह बहस करना चाहते हैं कि यीशु का पुनरुत्थान "विश्वास की बात" है, जो उस समय की घटनाओं से संबंधित नहीं है, एक दुविधा रही है। यदि यीशु का पुनरुत्थान समय-काल में घटित एक वास्तविक घटना नहीं थी, तो फिर उनके विषय में दी गई गवाही या तो भ्रांति में पड़े मूर्खों की गवाही थी जो भावनात्मक अनुभवों और वास्तविक घटनाओं में भिन्नता करने में सक्षम नहीं थे, या फिर ऐसी गवाही झूठी

थी। शताब्दियों से पौलुस की दलील सत्य को अपना साथी बनाए हुए है।

परमेश्वर ने यीशु की मृतक देह को तीसरे दिन जीवित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने उसके जीवित हो उठने के बाद दिखाई देने की गवाही दी, और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे फिर आएँगे। वे अब परमेश्वर के दाहिने हाथ राज्य कर रहे हैं। इन सब बातों के अतिरिक्त, मसीह द्वारा किए गए दावे, और उनके बारे में औरों द्वारा किए गए दावों को मनुष्य द्वारा अर्थ की व्यर्थ खोज का एक और अध्याय मान कर निःसंकोच उसकी अवहेलना की जा सकती थी। पौलुस जानता था कि यह यथार्थ नहीं है। वह जिस सुसमाचार का प्रचार करता था उसके सत्य पर अपने भरोसे के लिए वह अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार था।

आयत 16. कुरिन्थ के मसीही दोनों ही बातों को नहीं रख सकते थे। पौलुस ने ज़ोर दिया कि यदि ये मसीही अपनी मृत्यु के उपरांत देह सहित जीवित नहीं रहेंगे, **तो मसीह भी नहीं जी उठा।** या तो उन्हें यह दावा छोड़ना था कि कोई पुनरुत्थान नहीं होगा, या उन्हें उस गवाही को खारिज करना था कि यीशु जी उठा है। पौलुस केवल मृत्यु के बाद के जीवन के लिए ही बहस नहीं कर रहा था। वह पुनरुत्थान की, मृत्यु के पश्चात देह के अस्तित्व की पुष्टि कर रहा था। जैसे यीशु अपनी कब्र में से बाहर आया था, वैसे ही "जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। यीशु क्रूसित होने के पश्चात देह में दिखाई दिया। देह की सीमाओं के बिना एक अस्पष्ट सी मानवीय आत्मा की कल्पना करना कठिन है। ब्रेवार्ड एस. चाइलड्स के शब्दों में, "देह के बिना कोई मानवीय अस्तित्व नहीं है और यह जीवन से पृथक नहीं हो सकता है। नए नियम के युगांत की आशा देह के पुनरुत्थान के लिए है, आत्मा के बचे रहने के लिए नहीं।"[12]

आयत 17. कुरिन्थियों को निर्णय करना था, परन्तु पौलुस चाहता था कि वे जी उठे हुए प्रभु के विषय दी गई प्रेरितों की गवाही की अवहेलना करने के अभिप्रायों को भी जान लें। यदि यीशु उठाया नहीं गया, तो पौलुस द्वारा प्रचार किए गए सुसमाचार की प्रत्येक बात गलत थी। उन्हें इसके काल्पनिक परिणामों का सामना करना था: **तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है।** इसके अतिरिक्त उसने कहा, **और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो।** इस अंतिम वाक्यांश को दो प्रकार से समझा जा सकता है। (1) प्रभु के पुनरुत्थान के बिना, क्रूस का सारा उद्यम संदेह में आ जाएगा। (2) दूसरी ओर, यह कथन कुरिन्थियों के अनुभवों से निवेदन था। जी उठे प्रभु की सहायता के बिना उनमें पाप से ऊपर उठकर जीवन जीने की कोई सामर्थ्य नहीं होती। वास्तव में, कुरिन्थियों के मसीहियों ने मसीह को जीवित देखा था और अपने जीवनों में कार्य करते हुए भी। वे जीवित गवाही थे कि यीशु जी उठा है, क्योंकि वे पाप से फिर चुके थे। पुनरुत्थान के बिना, इन दोनों का ही परिणाम नकारात्मक होना था; परन्तु पत्रियों में पौलुस के धर्मी होने पर ध्यान केन्द्रित किए जाने से लगता है कि प्रेरित की इच्छा पहले अर्थ के प्रति थी (देखें रोमियों 4:24, 25)।

आयात 18. प्रेरित ने मसीह के सदेह जी उठने से इनकार करने से होने वाले परिणामों पर ज़ोर देना जारी रखा। पुनरुत्थान के बिना, **वरन जो मसीह में सो**

गए हैं (οἱ κοιμηθέντες, *होई कोईमेथेनटिस),* अर्थात, वे जो मर गए हैं, **वे भी नाश हुए।** मृतकों के पुनरुत्थान से इनकार करने का अर्थ, प्रभावी रीति से, मसीही विश्वास के लिए प्रिय आशा का त्याग कर देना है। छुड़ाए जाने और धर्मी ठहराए जाने का मूलभूत परिणाम अनन्त जीवन है।

पौलुस द्वारा सो जाने को आलंकारिक रूप में प्रयोग करना मृत्यु के विचार को कोमल कर देता है। पौलुस जहाँ रहता था वहाँ के प्लूटो से प्रभावित और वैरागी दार्शनिकों के निराशावादी विचार अधिकांश यूनानी-रोमी संसार में पैठ बना चुके थे। प्यालों को खोपड़ियों के आकार में बनाया जाता था; गर्भपात, वेश्यावृत्ति, और बच्चों को उघाड़ना प्रचलित आचरण थे। बहुतों की कब्रों पर अक्षर "एन एफ एन एस एन सी" खुदे हुए रहते थे, जो लातीनी भाषा की अभिव्यक्ति *नों फ्युई, फ्यूई, नों सुम, नों क्यूरो,* अर्थात "मैं नहीं था, मैं हूँ, मैं नहीं हूँ, मुझे परवाह नहीं" का संक्षिप्त रूप हैं।[13] "वैरागी आचरण का मुख्य शब्द है *विरक्ति;* इस दार्शनिक विचारधारा के अनुसार, "भला मनुष्य यह पहचान लेगा कि ऐसा कुछ नहीं है जो वह नियति द्वारा उसकी ओर भेजे गए से बचने के लिए कर सकता है।"[14] मसीह का सदेह जी उठना, जब स्वीकार किया जाता, तो इस रवैये की पकड़ को तोड़ देता।

आयत 19. जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं रखते हैं, जो सोचते हैं कि जिनका देहांत हो गया उनका सदा के लिए नाश हो गया, उन्होंने आशा त्याग दी है। पौलुस जानता था कि मानवजाति के लिए, मसीह के सदेह जी उठने के सन्देश को छोड़कर, आशा का और कोई सन्देश नहीं हो सकता है। सुसमाचार सन्देश इस आधार पर निर्माण करता है कि यीशु जिला उठाया गया। यदि यह सन्देश झूठा है, तो इसका अर्थ है कि किसी आशा का कोई अस्तित्व नहीं है। ऐसे में, मसीही **सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।** मसीह में आशा, मानवजाति के लिए एकमात्र आशा है।

प्रेरित इस बात की खोज करने के लिए आगे नहीं बढ़ा कि मृत्यु में सो जाने और मृतकों के पुनरुत्थान के लिए प्रभु के लौटने के बीच में क्या होता है। क्या मृत देह में जीवन मृत्यु पर आरंभ होता है या प्रभु के लौटने पर? पौलुस ने कुछ नहीं कहा। जो निश्चित है वह यह है कि अनन्त जीवन देह के साथ होगा। न ही भौतिक देह और न ही भौतिक वस्तुएँ अपने आप में बुरी हैं। बुराई और पाप लोगों द्वारा किए गए नैतिक चुनावों से होते हैं, देह को बनाने वाले पदार्थ से नहीं।

किस प्रकार की देह? (15:20-28)

[20]परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में वह पहिला फल हुआ। [21]क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। [22]और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। [23]परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला

फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। 24इस के बाद अन्तत होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अंत कर के राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। 25क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। 26सब से अंतिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा वह मृत्यु है। 27क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। 28और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।

बहुत वर्ष पहले, एलेक्ज़ेंडर बल्मैन ब्रूस ने मसीही ज्ञान विवेचना विद्या पर एक पुस्तक लिखी, ऐसे समय में जब विद्वानों ने इस विषय को लगभग छोड़ ही दिया था। अन्य बातों के अतिरिक्त ब्रूस ने नैतिक व्यवहार की ओर लौटने के लिए भविष्यद्वक्ताओं की पुकार और इसके साथ भविष्य के लिए आशावाद पर मनन किया। ब्रूस को यह कहना था:

> *धार्मिकता के लिए भावावेग* और *आशा के लिए भावावेग* सामान्य होने से इतना दूर हैं, कि जिन लोगों में इन में से एक भी अधिकाई से दिखाई देता है उन्हें सदा उन्हें सदा संसार के असाधारण लोगों में से एक होना चाहिए। परन्तु इन दोनों बातों का एक साथ होना इब्रानी भविष्यद्वक्ताओं को अनुपम बनाता है।[15] (बल जोड़ा गया।)

नासरत के यीशु, और जो प्रेरित उनका अनुसरण करते थे, वे भविष्यद्वक्ताओं से भी आगे निकल गए। उन्होंने (1) धार्मिकता के जीवन के लिए समझौता ना करने की माँग, और (2) प्रभु के दोबारा आगमन की आशावादी प्रतीक्षा को एक साथ सम्मिलित कर दिया। नए नियम में अंतिम बातों में निहित और बहुधा स्पष्टता से व्यक्त प्रकटीकरणों में धार्मिकता के जीवन के लिए पुकार है (1 कुरिन्थियों 15:34; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 पतरस 3:11)। प्रभु के लौट के आने का अर्थ है सदेह पुनरुत्थान, न्याय, और अनन्त जीवन। भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के आशावाद का पूर्वाभास दिया। ब्रूस ने आगे कहा,

> नैतिक आलोचक के लिए उदास और निराशावादी होना इतना स्वाभाविक है कि जब हम इन मनुष्यों [इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं] से, जिन्होंने अपने समकालीन लोगों से सबसे कठोर माँगें कीं, और उन का पालन नहीं करने पर अत्यधिक निर्मम निन्दा घोषित की, आने वाले स्वर्णिम युग का जब भलाई और आनन्द के सर्वोच्च आदर्श पूर्णतः पूरे हो जाएंगे, संसार के साहित्य में सबसे अधिक जोशीला, और उत्साही चित्रण पाते हैं, तो हमें अचरज होता है।[16]

जब पौलुस ने कुरिन्थियों को पुनरुत्थान के विषय लिखा, उसने *धार्मिकता* और *आशा* के विषयों को भी सम्मिलित कर लिया। आने वाले युग के विषय

प्रेरित के विचारों में, यीशु, आने वाला पुनरुत्थान, और आशा, गुत्थे हुए हैं। *आशा* का सन्देश आरंभ होता है विश्वासयोग्य गवाहों की गवाही से कि यीशु मरा और फिर परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला उठाया। मसीही *आशा* का प्रवाह और आधार यह अंगीकार है कि यीशु ही मसीह है और परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला उठा कर उसे मसीह घोषित किया है।

आयत 20. पुनरुत्थान की आशा के बिना परिदृश्य के बेरंग होने का 15:13-19 में चित्रण करने के पश्चात, पौलुस ने यीशु के पुनरुत्थान की वास्तविकता की तथा उसके अभिप्रायों की पुष्टि की। क्योंकि यीशु, वास्तव में, **मुर्दों में से जी उठा है**, इसलिए वह उनमें **जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ।** फिर से, सो जाना, मृत्यु के लिए, अलंकार है (देखें 15:18)। प्रेरित ने इस्राएल के इतिहास से गहराई से जुड़े विचार से लिया। लोगों को अपनी उपज के पहले फल परमेश्वर को आराधना के रूप में अर्पित करने थे (व्यवस्थाविवरण 26:1, 2)। वे पहले फल, एक प्रकार से, आने वाले और अधिक के अग्रदूत होते थे; परन्तु वे फसल का प्रारंभ भी थे। एक अन्य स्थान पर प्रेरित ने "पहला फल" को अलंकार के रूप में प्रयोग किया था, यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को विश्वासियों के, जो अधीरता से "लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं" (रोमियों 8:23), अंदर निवास करने के लिए दे दिया था।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर की सामर्थ्य को दिखाता था। वह मृतकों को जिला उठाने और अपने लोगों को उनके अंदर निवास करने वाले पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी करने में सक्षम है, परन्तु इसके साथ और भी है। पहले फल मसीही परिवार के आने वाले पुनरुत्थान की प्रतिज्ञा हैं। यीशु का पुनरुत्थान बीते समय की ऐतिहासिक घटना से बढ़कर है; *वह पहला फल था जो यह दिखाता था कि फसल का समय आरंभ हो गया है*। उनके मृतकों में से जिलाए जाने का परिणाम, परमेश्वर की सामर्थ्य में भरोसेमंद विश्वास, और एक खाली कब्र, अन्दर विद्यमान पवित्र आत्मा से बढ़कर था। यीशु "फसल का वास्तविक प्रारंभ" बन गया था।[17] यीशु में अनन्तकाल का पुनरुत्थान मानव इतिहास में प्रवेश पा चुका था। "यीशु के पुनरुत्थान का अर्थ अनन्तकाल की बात के इतिहास में प्रकट होने से कम कुछ भी नहीं है।"[18]

आयात 21. पौलुस ने यीशु की आदम तुलना करके, देहधारण के दूरगामी अनंतकालीन परिणामों को रेखांकित किया। प्रेरित ने यह बना के रखा कि आदम और हव्वा के पाप के कारण संसार में एक दूरगामी प्रभाव आया था, परन्तु उस प्रभाव पर मसीह के आगमन द्वारा विजय मिल गई। उसने इस विषय को रोमियों 5:12-17 में लिया और इसी समानता को 1 कुरिन्थियों 15:45-50 में जारी रखा। आदम के बलवे से मृत्यु आई थी - दोनों, शारीरिक और आत्मिक। न केवल आदम ने पाप किया, वरन उसने पाप के लिए नमूना भी निर्धारित कर दिया; वह उस पाप का जो मानवजाति का विशेष लक्षण बन गया, आदर्श बन गया। पौलुस ने रोमियों 3:23 में लिखा, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" पाप का विश्वव्यापी अस्तित्व और आदम तथा हव्वा का पाप

असंबंधित नहीं हैं, परन्तु धर्म शास्त्रियों ने पौलुस द्वारा बनाए गए समानान्तर में धर्म संबंधी उन प्रश्नों के उत्तर भी देख लिए जो पौलुस के मन से दूर थे। पौलुस के शब्दों में कुछ ऐसा नहीं है जो यह संकेत करे कि आदम के पाप के बाद, पाप और मृत्यु माता-पिता से बच्चों में बपौती के रूप में पहुंचाए गए। आरंभिक मूलभूत पाप की धरना न तो आदम की अवज्ञा में मिलाती है और न ही यीशु के पुनरुत्थान में।

अगस्टिन समान व्याख्या जो कुछ धार्मिक संगठनों में प्रचलित रही है, वह यह कि आदम के पाप में सारी मानवजाति ने पाप किया। स्त्री पाप की मूल वहनकर्ता कही जाती है और यौन संबंध को दोषी माना जाता है। ऑगस्टिन ने लिखा, "क्योंकि हम सब उस एक मनुष्य [आदम] में थे ..., जो उस स्त्री द्वारा पाप में गिराया गया जो उस में से पाप से पहले बनाई गई थी।"[19] दलील इस प्रकार चलती है, पाप मीरास में आता है, जिससे बच्चे में जन्म के समय पाप-दोष होता है। प्रारंभिक पाप के बाद, ऑगस्टिन ने कहा, मानवजाति ने "भ्रष्ट और दण्डित सन्तान उत्पन्न की।"[20] उसके विचारानुसार, एक आत्मिक दशा है जो मनुष्यों को परमेश्वर से दूर करती है, न कि वे चुनाव जो मनुष्य शरीर की लालसाओं को पूरा करने के लिए करते हैं। इस धारणा का निष्कर्ष है कि, क्योंकि मनुष्य पाप दोष के साथ पैदा होते हैं और उसके प्रभाव में रहते हैं, इसलिए वे कुछ अच्छा नहीं कर सकते हैं।

पौलुस की कुरिन्थियों को दी गई दलील उस समय की परिस्थितियों का समाधान करती थी, बाद की पीढ़ियों के धर्म संबंधी प्रश्नों का नहीं। वह परमेश्वर की सार्वभौमिकता और मानवीय स्वतंत्रता के वृहद प्रश्नों से चिंतित नहीं था - प्रश्न जिन्होंने ऑगस्टिन को परेशान किया जब वह अपनी युवावस्था की गतिविधियों पर विचार कर रहा था।[21] जैसे पाप और मृत्यु आदम के द्वारा आईं, पौलुस ने तर्क दिया, वैसे ही क्षमा और आशा (**मरे हुओं का पुनरुत्थान**) यीशु के द्वारा आए, उस दूसरे आदम, उस मनुष्य के द्वारा जो ईश्वरीय परन्तु पूर्णतः मानव भी था। प्रेरित के विचारों को कार्यकारी होने के लिए, इस गवाही को स्वीकार करना अनिवार्य है कि "तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया।" पौलुस चाहता था कि उसके पाठक जान लें कि यीशु के पुनरुत्थान के तात्पर्य क्या हैं: सभी छुड़ाए हुए अनन्त जीवन के लिए जिलाए जाएंगे।

आयत 22. यद्यपि दोनों में समानान्तर सटीक नहीं हैं, फिर भी पौलुस ने अपने पाठकों को मसीह में होकर परमेश्वर के कार्य को समझाने के लिए आदम के उदाहरण को लिया। पहले मनुष्य ने पाप के प्रलोभन की सामर्थ्य को दिखाया। आदम का बलवा, एक मनुष्य द्वारा किया गया, मनुष्यों से अपेक्षित कार्य था। उसने तथा उसके वंशजों ने पाप को चुना। पाप के द्वारा, जो सबसे पहले आदम में प्रकट हुआ, **सब मरते हैं।** आदम ने जो उसने मानव जाति के होने को दिखाया, वही उस की विश्वव्यापकता थी। आदि अभिभावकों द्वारा निर्धारित किए गए नमूने का अनुसरण करके, मनुष्यजाति ने अपने आप को परमेश्वर का विरोधी दिखाया।

यीशु मसीह ने, आदम के समान, मनुष्य परिवार के एक सर्वव्यापी सत्य को दिखाया: लोग चुनाव कर सकते हैं। बुराई के समान ही, भलाई में भी एक आकर्षण है। **मसीह में सब जिलाए जाएंगे**, अर्थात, जितने मृत्यु से मुड़ेंगे वे उसमें छुटकारा और मेल-मिलाप पाएंगे। यदि आदम और मसीह के व्यवहारों में बिलकुल एक सी समानता होती, तो आदम से आरंभ हुई सर्वव्यापी मृत्यु के समान मसीह में सर्वव्यापी उद्धार आ जाता। किंतु, पौलुस जानता था कि सभी मसीह को स्वीकार नहीं करेंगे। उस मसीहा, ख्रीस्त, ने विश्वव्यापी प्रस्ताव दिया है; उसने विश्वव्यापी चुनाव प्रस्तुत किया है। दोनों, यहूदी और अन्यजाति मसीह की ओर, जो कोई पक्षपात नहीं करता है, मुड़ सकते हैं। जो उसको चुनते हैं, उन्हें प्रभु क्षमा दान प्रदान करता है; जितने उसमें हैं वे "सब जिलाए जाएंगे।" पौलुस का अभिप्राय न तो यह था कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को मिल जाएगा (रोमियों 2:6-8) और न ही यह कि आदम की नियति प्रत्येक शिशु को गर्भधारण के समय छू लेती है। वह कह रहा था कि आदम ने दौड़ को पाप और मृत्यु के मार्ग पर डाल दिया था। फिर भी विश्वव्यापी तौर पर, मसीह ने मानव जाति को छुटकारे और जीवन की माँग और चुनाव करने की अनुमति दी। वह सारे विश्व का उद्धारकर्ता है।

आयत 23. पौलुस ने यह कह कर कि सर्व प्रथम यीशु जिलाया गया, मृतकों के जिलाए जाने के अपने विषय को जारी रखा। जब वह दोबारा प्रकट होगा, जितने मसीह में हैं वे पुनरुत्थान में भी भागी होंगे। प्रेरित ने ज़ोर दिया कि प्रत्येक का जिलाया जाना **अपनी अपनी बारी से** होगा। उसने शब्द **आने** (παρουσία, *पैरुसिया,* "प्रकट होना") को, जिसका अर्थ था प्रभु का युगान्त के समय लौट कर आना, तकनीकी रूप में केवल यहीं पर, थिस्सलुनीकियों की पत्रियों (1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 8) के बाहर, प्रयोग किया। अनेकों बार पौलुस ने अपने संभावित आने को या अपने सहकर्मियों के आगमन का उल्लेख किया। 1 कुरिन्थियों में चार अन्य बार, प्रेरित ने प्रभु के लौट कर आने का विशेषतया उल्लेख किया (1:7, 8; 4:5; 11:26; देखें 16:22)। लेकिन मसीह का लौट कर आना कुरिन्थियों को लिखी पत्रियों में या पौलुस के अन्य लेखों का सबसे महत्वपूर्ण विषय नहीं माना जा सकता है। पौलुस को अधिक रुचि इस बात में थी कि पहले और दूसरे आगमन के बीच के अंतराल में मसीही कैसे रहते हैं न कि उस घटनाक्रम का ख़ाका खींचे जो अंतिम तुरही के फूंके जाने पर होगा।

जो मसीह में हैं वे उसकी महिमा में भागीदार होंगे। तीन विषयों का परस्पर संबंध - मृतकों में से जिलाया जाना, मसीह का दूसरा आगमन, और अंतिम न्याय - की पौलुस द्वारा कल्पना की गई, न कि दलील दी गई। पुनरुत्थान का **पहिला फल मसीह** है। उसमें मृतकों का पुनरुत्थान आरंभ हो चुका है। वर्तमान युग के पूरे हो जाने के अग्रिम के रूप में, मसीहियों को दिया गया है कि "आत्मा का पहिला फल ... लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं" (रोमियों 8:23)। फिर भी ऐसा कुछ है जो भविष्य है। यीशु जिलाया गया, परन्तु

उसके अनुयायी पुनरुत्थान को नहीं जानेंगे जब तक प्रभु दुबारा नहीं आ जाएगा।

यह पौलुस के तत्कालीन उद्देश्यों से बाहर था कि वह उनके पुनरुत्थान के विषय कुछ कहे जो मसीह को नहीं जानते हैं; प्रेरित ने इस अध्याय में किसी विश्वव्यापी पुनरुत्थान की कोई बात नहीं की। अन्य स्थानों पर उसने की। साथ ही 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-18 में, पौलुस ने यह साथ जोड़ दिया कि जो मसीह में जीवित हैं वे यीशु के पास उठा लिए जाएंगे जब वह अपने संगी लोगों के दल के साथ लौट कर आएगा। प्रेरित ने 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10 में यह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर उन को दण्ड देगा जो उसके लोगों को सताते हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 5:10)। तब भी, उसने परमेश्वर का तिरस्कार करने वालों की जिलाई गईं देहों के बारे में कुछ नहीं कहा। नए नियम में सदेह जिलाया जाना छुड़ाए हुए लोगों के लिए दी गई प्रतिज्ञा है। यह कहने के अतिरिक्त कि वह "अनन्त विनाश" (2 थिस्सलुनीकियों 1:9) होगा, नए नियम में इसकी कोई चर्चा नहीं की गई है कि उनका अस्तित्व कैसा होगा जो मसीह की ओर अपनी पीठ कर लेते हैं।

आयत 24. प्रभु का आगमन, उसका *पैरुसिया,* और इस युग का **अन्त** एकसाथ होंगे। इस युग में या आने वाले युग में मसीह के राज्य या परमेश्वर के राज्य के बीच के संबंध के बारे में सिद्धान्त प्रस्तुत करना व्यर्थ है। कुछ अर्थों में यीशु के राज्य का आरंभ उसके स्वर्गारोहण के साथ आरंभ हो गया था और तब तक चलता रहेगा जब तक वह दोबारा न्यायी और प्रभु के रूप में आ नहीं जाएगा (प्रेरितों 1:9-11)। यीशु का पहला प्रकट होना और दूसरी बार ऐसा होने में इतना निकट संबंध है कि पहले के बारे में ध्यान किए बिना दूसरे के बारे में बात करना असंभव है। पहला प्रकट होना दूसरे की निश्चितता है। पौलुस ने सदैव ही यीशु का चित्रण अपनी कलीसिया पर परमेश्वर के दाहिने हाथ राज्य करते हुए किया है (रोमियों 8:34; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 3:1)। जब अन्त आएगा, **वह राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा**।

जब प्रभु लौट कर आएगा और कलीसिया पृथ्वी के क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगी, मसीह का छुटकारे का कार्य पूरा हो जाएगा। यह सत्य होने पर, "ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो" (15:28)। वह (मसीह) **सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त कर के** राज्य को पिता के हाथ में सौंप देगा। आकाश की जो भी विरोधी शक्तियाँ होंगी (कुलुस्सियों 1:16), या वर्तमान में मसीह के राज्य के लिए जो भी चुनौतियां होंगी, वे सब प्रभु यीशु के राज की अधीनता में आ जाएँगी। पौलुस यह संकेत नहीं दे रहा था कि मसीह फिर "सारी प्रधानता और अधिकार और सामर्थ्य" के योग्य नहीं रहेगा। अपितु, वह बल दे रहा था कि परमेश्वर का मनुष्य जाति के छुटकारे के लिए बनाई गई सब को सम्मिलित करने वाली योजना पूरी हो जाएगी। बुद्धिमता की माँग है कि हम परमेश्वर के राज में विश्वास रखें और मसीह से परमेश्वर के हाथ में सत्ता परिवर्तन के विषय और अटकलें ना लगाएँ। पौलुस ने मसीह के महिमा में प्रगट होने और सब बातों के पूरा होने के बीच मसीह के हज़ार वर्ष के राज के विषय

कुछ नहीं कहा। ऐसा कोई भी सिद्धांत मनुष्यों का बनाया हुआ है।

आयत 25. यीशु को अपनी कलीसिया पर राज्य **करना अवश्य है।** वह एक लोगों का राजा है (मत्ती 2:2; 27:11; लूका 19:38; कुलुस्सियों 1:13) और पहिलौठों की साधारण सभा का प्रधान (इब्रानियों 12:23)। कलीसिया और परमेश्वर के राज्य के मध्य सूक्ष्म भेद बाद के युग के लिए हैं; नए नियम में, ऐसी भिन्नताएं लादी जाती हैं। पिछली आयत में, पौलुस ने बलपूर्वक कहा कि मसीह ऐसी समस्त सामर्थ्य और अधिकार को समाप्त कर देगा जो उसके राज की प्रतिद्वन्दी होगी (1 कुरिन्थियों 15:24)। किंतु वाक्यांश **जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए** में पहले उपनाम का पूर्ववर्ती अनिश्चित है। क्या परमेश्वर सब बातों को मसीह के पाँवों तले कर देगा, या स्वयं मसीह अन्य सारी सामर्थ्य को आधीन कर लेगा? संयुक्ति **क्योंकि** 15:25 को पिछली आयत के विचार के साथ बांधती है, जो मसीह के विषय बात कर रही है; परन्तु निश्चय ही भजन 8:6, जिसे यहाँ उद्धृत किया गया है, का विषय परमेश्वर है। प्रत्यक्षतः 15:25 में भी विषय परमेश्वर ही है। परमेश्वर "उसके [मसीह के] सारे बैरियों को उसके पाँवों तले कर देगा।" शब्द "पाँवों तले" उसी विचार की प्रतिध्वनि हैं जो भजन 8:6 और 110:1 में मिलता है। "परमेश्वर सामर्थ्य का स्त्रोत और कर्ता है, और मसीह वह है जिसके आधीन सब बातें हैं।"[22]

देहधारी मसीह, जिसने पुरुषों और महिलाओं को पाप से क्रय कर लिया है, अपने स्वर्गारोहण और युगान्त में अपने *पैरुसिया* के अंतरिम समय में राज्य करता है। पिता के राज्य और पुत्र के राज्य के मध्य जो भी भिन्नता की जानी है वह परमेश्वरत्व की हस्ती में छिपी है। पौलुस ने किसी भिन्नता का संकेत नहीं दिया। जो पिता को स्वीकार करते हैं वे ऐसा पुत्र को ग्रहण करने के द्वारा करते हैं। जो परमेश्वर के पास मसीह से होकर आते हैं, वे उसके आगमन पर उसके विजयोत्सव में भागी होंगे (देखें रोमियों 14:9)। इस वर्तमान युग में बुराई जो क्षणिक विजय लेने पाती है, वह किसी काम की नहीं होगी। मसीह का पुनरुत्थान अंतिम विजय की निश्चितता है।

आयत 26. आरंभ से ही, शारीरिक रीति से, मृत्यु का अर्थ रहा है श्वास का अन्त, चेतना और गतिविधि का अन्त; परन्तु मृत्यु और मरने के प्रथम उल्लेख में (उत्पत्ति 2:17), परमेश्वर ने संकेत दिया कि इसमें शारीरिक के अतिरिक्त भी आयाम है। चाहे उसे मृत्यु के दूत या **अन्तिम बैरी** के रूप में व्यक्तित्व दिया गया हो, मृत्यु जीवन का विलोम है। जीवन आनन्द, व्यक्ति के अपने स्थान को पाने, प्रेम, परिवार, निश्चिन्तता, और संतोष का चिन्ह है; मृत्यु जीवन का विपरीत है। यीशु ने मृत्यु के डंक को तोड़ दिया है (15:55, 56)। वह इसलिए आया जिससे लोग यथासंभव सर्वोत्तम जीवन पाएँ (यूहन्ना 5:24; 10:10)।

प्रथम फल मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा न केवल विश्वासियों के लिए सदेह जिलाया जाना निश्चित है, वरन यीशु का पुनरुत्थान सभी शत्रुओं पर विजय को सुनिश्चित करता है, "मृत्यु" पर भी। जब तक मसीह दोबारा नहीं आता है, पाप और मृत्यु की सामर्थ्य मनुष्यों के संसार में है; परन्तु अन्त में, वह भी जाती

रहेगी। “मृत्यु” पाप के द्वारा आई; जीवन उससे है जो मृतकों में से जी उठा। उसके विजय के पूर्ण होने के पश्चात मृत्यु का अस्तित्व नहीं रहेगा।

पौलुस ने जो शब्द उद्‌धृत किए, भजन 8:6 के संदर्भ में, उनका सामान्य उपयोग है। भजनकार ने पूछा, “मनुष्य (जातिगत) क्या है, कि तू उसकी सुधि ले ... ?” (भजन 8:4)। पौलुस ने इन शब्दों को विशिष्ट रीति से नासरत के यीशु पर लागू किया (देखें इब्रानियों 2:5-8)। भजनकार ने बल दिया कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया और उसे “तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।” पौलुस ने इन शब्दों की अनुपम उपयोगिता सर्वोत्तम मनुष्य, अर्थात, देहधारी मसीह, में पाई। देहधारी होने और उससे होने वाली पुत्र की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, परमेश्वर ने अब “सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है” (1 कुरिन्थियों 15:27)। यीशु का राज्य विशेषकर प्रगट होता है उसके द्वारा अपने लिए लोगों को शुद्ध और पवित्र बनाने से (देखें 1 पतरस 1:14-19)। वह अपनी कलीसिया पर राज करता है।

आयत 27. प्रेरित ने इस सत्य को स्पष्ट किया। NASB का अनुवाद **परन्तु जब वह कहता है** उत्तम पुरुष एक वचन क्रिया (εἴπῃ, *ईपे)* के लिए कर्ता प्रदान करता है; संदर्भ को निर्धारित करना है कि “वह” क्या कहता है। क्योंकि पौलुस भजन से उद्‌धृत कर रहा था, इसलिए इससे अच्छा अनुवाद होगा “परन्तु जब वह कहता है।” अनुवाद में भिन्नता छोटी सी ही है। जो पवित्र-शास्त्र कहता है, परमेश्वर ने कहा है; और जो परमेश्वर ने पवित्र-शास्त्र में कहा है वही पौलुस का केन्द्र बिंदु था। प्रेरित ने टिप्पणी की, **तो प्रत्यक्ष है, कि जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा।** परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र की अधीनता में नहीं दिया गया। जबकि पिता और पुत्र अधिकार और महिमा में पृथक नहीं किए जा सकते हैं, पौलुस ने पिता की प्राथमिकता पर बल देने में कोई हिचकिचाहट नहीं की। पवित्र-शास्त्र कभी पिता को पुत्र की अधीनता में नहीं बताता है। पिता ने पुत्र को कार्य दिया (यूहन्ना 5:36); पुत्र ने पिता की इच्छा को पूरा किया (यूहन्ना 4:34)। पौलुस ने बल दिया कि देहधारी होने में यीशु के अनुपम कार्य ने उन्हें अपने राज्य पर राज करने के लिए सक्षम कर दिया था (इफिसियों 1:22, 23), परन्तु उनका राज परमेश्वर की सर्वोच्चता के साथ अनुकूलित था।

आयत 28. केवल इस आयत और 1:9 में पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में यीशु को परमेश्वर का **पुत्र** कहा। प्रेरित ने पिता और पुत्र को ऐसे नहीं दिखाया मानो वे वर्चस्व के लिए स्पर्धा में हों। यह कल्पना करना कठिन है कि त्रिएकता में स्पर्धा क्योंकर कोई विषय होगी। पिता और पुत्र एक मन और एक हस्ती हैं। पवित्र आत्मा के साथ (देखें 6:19; 12:3), वे एक परमेश्वर हैं। पौलुस ने जो भिन्नता दिखाई, उसका उद्देश्य यीशु के उद्धारकर्ता एवं अपने लोगों का शिरोमणि होने की भूमिका से है। उसका राज उनके समान है। जब वह न्याय करने के लिए, जिलाए जाने के लिए, अपने लोगों को अनन्तता में ले जाने के लिए आएगा, मध्यस्थ की उसकी इस अनुपम भूमिका का अन्त हो जाएगा (1 तीमुथियुस 2:5;

देखें 1 कुरिन्थियों 8:6)। उस समय वह **आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।** परमेश्वर जो सब में सब कुछ है वही परमेश्वरत्व है।

अभिप्राय यह है कि, पुत्र के स्वर्गारोहण और युगांत में उसके *पैरूसिया* (15:24) के मध्य, पुत्र के पास राज और अधिकार है जो मानवीय क्षेत्र में उसके जीवन और मृत्यु के साथ जुड़ा हुआ है। अभी भी, पुत्र का अधिकार पिता की महिमा या सार्वभौमिकता के व्यय से नहीं है। पिता ने पुत्र को उसके देहधारण पर आधारित कार्य सौंपा। पिता और पुत्र मानवजाति के उद्धार की एक ही योजना में पूर्णतया एक हैं।

मसीह का सन्देश संपूर्ण हृदय से, मृत्यु तक सहने तक के लिए, किए गए समर्पण से लेशमात्र भी कम नहीं है (लूका 14:26, 27)। पौलुस ने दलील दी कि मृतकों का पुनरुत्थान ही वह तत्व है जो गलील के इस शिक्षक के साथ उसके द्वारा मांग किए गए परिवर्तन भरे जीवन को जोड़ता है। आने वाले युग में जीवन की संभावना के बिना, केवल एक मूर्ख ही यीशु का अनुयायी होने के लिए अपने आप को भय, पीड़ा, और मृत्यु के जोखिम में डालेगा। सदेह जिलाया जाना मसीही अंगीकार के साथ जोड़ी गई बात नहीं है; यह मसीह में हमारे विश्वास के मर्म की बात है।

एक बड़ा "क्यों?" (15:29-34)

29नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उन के लिये बपतिस्मा लेते हैं? 30और हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं? 31हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की शपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं, कि मैं प्रति दिन मरता हूं। 32यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, "तो आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे।" 33धोखा न खाना, "बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।" 34धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूं।

आयत 29. बाइबल के छात्रों ने इस आयत की कठिनाइयों को समझाने के लिए अनेकों मार्ग दिए हैं। इनमें से अधिकांश व्याख्या करने वालों की चतुराई को अधिक और उचित स्पष्टीकरण को कम दिखाते हैं। इस आयत की शब्दार्थ व्याख्या पर संपूर्ण सैद्धांतिक विषय टिके हुए हैं। कुछ औरों का कहना है कुरिन्थ वासी मृतकों के प्रतिनिधि बनकर उनके लिए बपतिस्मा लेने की प्रथा का पालन कर रहे थे। यदि ऐसा है, तो नए नियम में यह केवल यहीं दर्ज है। साथ ही, जिस हलके भाव में पौलुस ने इस विषय को उठाया और फिर छोड़ दिया, उससे इस स्पष्टीकरण में काफ़ी कठिनाइयाँ प्रतीत होती हैं। यदि मसीहियों का मृत

अविश्वासी मित्रों या रिश्तेदारों के लिए बपतिस्मा हो रहा था, तो यह मानने योग्य नहीं है कि पौलुस इस प्रथा उल्लेख करके उसे सुधारने का कोई प्रयास नहीं करता। प्रेरित बिगड़े हुए मसीही सिद्धांतों का सामना करने से हिचकिचाता नहीं था। जितनी बार पौलुस ने बपतिस्मा की चर्चा की (रोमियों 6:3-7; 1 कुरिन्थियों 6:11; गलतियों 3:27; कुलुस्सियों 2:12; तीतुस 3:5), उसने बपतिस्मा लेने वाले के संबंध में उसके द्वारा विश्वास की प्रतिक्रिया की बात कर रहा था।

इस विचार में निहित कठिनाइयों के होते हुए भी, कि कुरिन्थ वासी प्रतिनिधि बनकर बपतिस्मा ले रहे थे, कुछ व्याख्याकर्ताओं के लिए इस खण्ड का यही सबसे उपयुक्त स्पष्टीकरण है। हरमन रिडर्बोस ने लिखा, "यह संभव है कि वह अपने प्रतिद्वंदियों की किसी ऐसी प्रथा का उल्लेख कर रहा था जिसके साथ वह स्वयं सहमत नहीं था।"[23] यदि यह सत्य है तो, चाहे वह जानता था कि इसका कोई लाभ नहीं हैं, पौलुस ने इस प्रथा को हानिकर नहीं समझा होगा। संभवतः प्रेरित के शब्द, **यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उन के लिये बपतिस्मा लेते हैं**, इस प्रथा के प्रति उसकी अस्वीकृति को दिखाते हैं। यहाँ इस प्रथा के इससे अधिक बलवन्त तिरस्कार की अपेक्षा की जाती है, चाहे इससे जिलाए जाने के शिक्षा को सहारा मिलता है। परन्तु पौलुस ने अपने आप को इस शिक्षा से पृथक किया। उसने पूछा **वे क्या करेंगे?** - न कि "हम क्या करेंगे?"प्रश्न का भाव यह प्रतीत होता है, "मृतकों के लिए बपतिस्मा लेने का क्या लाभ, यदि मृतकों का पुनरुत्थान होना ही नहीं है?" इसका एक अच्छा भावानुवाद यह होगा: "उन लोगों में से जो पुनरुत्थान का इनकार करते हैं, कुछ मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते हैं। इसमें भला क्या समझदारी हुई?"[24]

वैकल्पिक रीति से, हो सकता है कि पौलुस किसी व्यक्ति द्वारा मृतकों के विषय विचार करने के पश्चात, बपतिस्मा से संबंधित अपनी समझ की महत्वपूर्णता के बारे में कह रहा हो। जो मसीह में विश्वास लाया है, वह यह समझने के बाद कि जैसे अन्य मर गए हैं, वह भी मरेगा और अंतिम तुरही फूंके जाने पर प्रभु का सामना करेगा, इसलिए वह बपतिस्मा लेना चाह रहा हो। डेविड ई. गारलैण्ड ने पौलुस के विचारों का भावानुवाद ऐसे किया: "यदि मृतकों का पुनरुत्थान है ही नहीं, तो बपतिस्मा एक ऐसी व्यर्थ परंपरा हो जाता है जो उसका प्रतिनिधित्व करती है जो होगा ही नहीं।"[25] माना कि यह कठिन है कि पूर्वसर्ग ὑπέρ *(हुपेर)* में से यह अर्थ "की ओर दृश्य" को निकाला जाए, परन्तु पौलुस सामान्यतः प्रयुक्त होने वाले शब्दों के अर्थ को और वृहद करने से रहित नहीं था।

एक और संभावना है कि पौलुस का कहना विश्वासियों का बपतिस्मा लेना, उन लोगों के विश्वास की गवाही देना था जिनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई थी। कोई भक्त विश्वासी उस मृतक के विश्वास को व्यक्त करने के लिए बपतिस्मा ले लेता था। वह ऐसा परमेश्वर से क्षमा और अनुग्रह की विनती के लिए कर सकता था। ऐसे होने से इसका स्पष्टीकरण मिल सकता है कि पौलुस ने जितना इसके

विषय में कहा, उससे अधिक क्यों नहीं कहा। संभवतः उसने उनके दुःख के कारण, जिन्होंने मृतक के लिए बपतिस्मा लिया था, इससे अधिक और कुछ कहना स्थगित कर दिया।

पौलुस के शब्दों का कोई भी स्पष्टीकरण पूर्णतया संतोषजनक नहीं है। परन्तु लोगों ने इस आयत से कुछ ऐसे भी निष्कर्ष भी निकाले हैं जिनका तिरस्कार किया जा सकता है। (1) क्योंकि यूनानी में "मृतक" शब्द बहुवचन में है, इसलिए इसका अभिप्राय मृतक यीशु से नहीं हो सकता है, जैसा कि कुछ ने सुझाव दिया है। (2) नए नियम में मृतकों के बपतिस्मा पर और कोई भी शिक्षा ना होने के कारण, हम इस धारण को निःसंकोच अनदेखा कर सकते हैं कि दूसरे के पापों को धो देने के लिए किसी अन्य द्वारा लिए गया बपतिस्मा प्रभावी है (देखें प्रेरितों 22:16)। वह बपतिस्मा जो बचाता है वह उस पश्चातापी विश्वासी द्वारा, वह जो बपतिस्मा ले रहा है, अपने विश्वास की प्रतिक्रिया है।

आयत 30. अपने ध्यान को कुरिन्थियों से हटा कर अपनी ओर करते हुए, पौलुस ने पूछा कि क्यों वह या अन्य प्रचारक मसीह के लिए अपने जीवन जोखिम में डालें यदि मृतकों का पुनरुत्थान है ही नहीं। यदि प्रेरित ने मृत्यु के पश्चात जीवन की सदेह पुनरुत्थान के बिना कल्पना भी की, तो उसे ऐसे जीवन में कोई सार्थकता या आकर्षण दिखाई नहीं दिया।

यूनानी दार्शनिकों के लिए, यह धारणा कि भौतिक देह मृत्यु के बाद भी बच जाएगी, अज्ञानतापूर्ण मूर्खता की पराकाष्ठा थी। उदाहरण के लिए, अथेने में, प्रेरित को प्रचार का सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली, जब तक कि उसने मृतकों के पुनरुत्थान की बात नहीं की (प्रेरितों 17:32)। पौलुस के कुछ प्रतिद्वंदियों ने उसकी प्रेरित होने के अधिकार पर शंका की क्योंकि वह बोलने में हल्का था (2 कुरिन्थियों 10:10)। उनका दावा था कि उसके पास कोई दार्शनिक ज्ञान नहीं था (देखें 1 कुरिन्थियों 2:6)। अपने आलोचकों के लिए प्रेरित का प्रत्युत्तर था कि बुद्धिमता में वह चाहे जैसा भी दुर्बल था, परन्तु उसने उसकी भरपाई अपने किसी भी प्रकार से समझौता ना करने वाले विश्वास से कर दी थी। वह अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार था। विद्वान दार्शनिक ऐसा करने के लिए तैयार नहीं थे।

पौलुस अपने आलोचकों का खंडन करने से नहीं हिचकिचाया। यदि उसमें किसी बुद्धिमता की कमी थी, तो वह सांसारिक बुद्धि की थी। उसने परमेश्वर के कार्य को अपनी दुर्बलता में होकर समझ पाना परमेश्वर की महिमा का चिन्ह जाना। उसने किसी दार्शनिक शिक्षा के प्रति कोई ढोंग नहीं रखा। इसके अतिरिक्त, उसका लगातार जोखिमों का सामना करना परमेश्वर के प्रावधानों पर उसके विश्वास का प्रमाण था। पौलुस ने कुरिन्थियों से पूछा कि उनका क्या विचार था, यदि मृतकों का पुनरुत्थान है ही नहीं तो वह वैसे क्यों जीवन व्यतीत करता और सिखाता था जैसा वह कर रहा था। क्यों वह **हर घड़ी जोखिम में** पड़ा रहता?

आयत 31. जब पौलुस ने कहा, **मैं प्रति दिन मरता हूं**, तो उसका तात्पर्य था

कि वह लगातार जोखिम में रहता है। वह हर पल बन्दी बनाए जाने या मृत्यु की संभावना का सामना करता था। वह जहाँ भी जाता था, उसके शत्रु वहाँ होते थे, परन्तु प्रेरित सुसमाचार के लिए अपने दुखों को कोई बोझ नहीं समझता था (देखें प्रेरितों 9:16; 2 कुरिन्थियों 11:23-27)। वह उस आनन्द और संतुष्टि के लिए अपने जीवन का जोखिम उठाने को तैयार था जो उन मसीहियों में जाग उठता था जैसे कि कुरिन्थ के थे, परमेश्वर की महिमा के लिए, और आत्माओं के उद्धार के लिए। शब्द νή (*ने,* "अफ्फर्म"), जिसे विशेषकर शपथ लेने के समय प्रयोग किया जाता है, नए नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इसके साथ प्रेरित ने गंभीरता और दृढ़ता के साथ, उसने जो लिखा उसके सत्य की पुष्टि की। इस आयत को REB ऐसे लिखती है, "मैं प्रतिदिन मरता हूँ: मेरे मित्रों मैं आप में अपने घमण्ड की शपथ लेता हूँ - क्योंकि मसीह यीशु हमारे प्रभु में मैं आपके लिए घमण्ड करता हूँ।"

वाक्यांश **उस घमण्ड की शपथ ... मैं तुम्हारे विषय में** का अर्थ प्रश्न उठाता है। वाक्यांश में "तुम्हारे" (KJV) या "तुम में" प्रबल है। इसका भाव है कि "गंभीरता से शपथ द्वारा, मैं तुम्हारे घमण्ड करने का आग्रह करता हूँ।" प्रेरित संभवतः उस जोखिम के विषय गंभीर पुष्टि कर रहा होगा जिसमें वह रहता था, यह कहने के द्वारा कि यह उतना ही सत्य है जितना उनका मसीह की आशीषों में "घमण्ड" करना। यूनानी में इस संभावना के लिए स्थान है कि पौलुस का उल्लेख कुरिन्थियों के मसीहियों द्वारा उनके विश्वास में व्यक्त संतुष्टि और आनन्द के लिए होगा। अन्य संभावना है कि प्रेरित अपनी संतुष्टि और आनन्द के विषय कह रहा था, उनमें होकर उसकी अपनी संतुष्टि और आनन्द। आयत का अंतिम भाग स्पष्ट करता है कि जिस "घमण्ड" को विषय बनाया गया था वह **मसीह यीशु में** उसके द्वारा उनके विषय में किया गया था। प्रेरित ने जो कहा उसके सत्य की अभिव्यक्ति उसने यह शपथ उठाने के द्वारा की, कि उसके प्रचार द्वारा ही वे मसीह में जीवन साझा करते थे। यह वह घमण्ड था जो उनके मसीह में होने के द्वारा संभव और परिभाषित होता था।

आयत 32. पुनरुत्थान और उससे जुड़े हुए अनन्त जीवन को एक तरफ रखते हुए, पौलुस ने माना कि उसे पता था कि कुछ उसके द्वारा जान का जोखिम उठाने में गुप्त उद्देश्य देखते थे। कुछ कह सकते थे कि प्रेरित **मनुष्य की रीति** (κατὰ ἄνθρωπον, *काटा एन्थ्रोपौन;* 15:32), से कार्य करता था, अर्थात, मसीही समाज में अगुवा होने के नाते उसकी जो भी प्रतिष्ठा और महत्वाकांक्षाएं थीं, उनके लिए। प्रेरित ने इसका इनकार किया; "मनुष्य की रीति" उन बातों को नहीं समझा सकती थी जिन्हें वह सह रहा था। कुरिन्थ में उसकी जान को जोखिम था (प्रेरितों 18:12); अब, ऐजियन सागर के पार, दो सौ मील के लगभग की दूरी पर भी जोखिम कम नहीं हुआ था। वह अभी से कह सका **इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा।**

उदासीन मनःस्थिति के दार्शनिक इस बात से अवगत थे कि किसी असामान्य रीति से कठिन या जोखिम भरे अनुभव से होकर निकलने को "वन-

पशुओं से लड़ना"[26] कहा जाता था। इसकी बहुत कम संभावना है कि पौलुस को वास्तविकता में किसी अखाड़े में ले जाकर पशुओं से उसका द्वंद्व करवाया गया था, यद्यपि कुछ ने इसका यही अर्थ लिया है। यदि ऐसा होता तो सम्भवतः वह इस परीक्षा से बच नहीं पाता; बहुत कम ही बचने पाते थे। पौलुस ने इफिसुस में कुछ कठिन परीक्षाओं का सामना किया था, लेकिन उसने उनका कोई विवरण नहीं दिया। उसने लगभग तीन वर्ष इफिसुस में बिताए (देखें प्रेरितों 20:31), परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि 1 कुरिन्थियों लिखने से कितने पहले से वह वहाँ पर था। निश्चय ही वह धातु-कारीगरों द्वारा किए गए दंगे का उल्लेख नहीं कर रहा था, क्योंकि वह तो उसके शहर को छोड़ने का कारण था (प्रेरितों 19:24, 25; 20:1; देखें 2 तीमुथियुस 4:14)।

पौलुस की परीक्षाएं इस बात की गवाह थीं कि यदि मृतकों का पुनरुत्थान है ही नहीं तो फिर अपने आप को इतनी कठिन परीक्षाओं में पड़ने देने की क्या आवश्यकता थी। आने वाले जीवन में कोई आशा ना होने से, इन कठिनाइयों का कोई लाभ नहीं था। इसके स्थान पर सबसे अच्छा होता कि भोगियों[27] के समान किया जाए: "तो आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे" (यशायाह 22:13)। इस कथन का भाग्यपरायण यूनानी-रोमी संसार के कई इलाकों में लोगों की मनोवृत्ति में गहराई से बैठा हुआ था। भाव था, "यदि आप मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं रखते हैं, तो अपने विचारों को उनके तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए निर्भीक हों। अभी के लिए जो भी अर्थहीन सुख आपको मिल सकते हैं उनका आनन्द लें क्योंकि भविष्य में तो केवल मृत्यु ही है।" ऐसे वाक्यांश जैसे कि लैटिन का *carpe diem* ("दिन को थाम लो") इसी दर्शन-शास्त्र में अन्तःस्थापित हैं। यदि भविष्य केवल मृत्यु और कब्र ही है, तो फिर वर्तमान पल का ही महत्व है।

आयत 33. जो बचाए हुओं के लिए युगांत में सदेह जिलाए जाने का इनकार करते थे, पौलुस चाहता था कि उसके पाठक उनके बुरे प्रभाव से बचे रहें। प्रतीत होता है कि कुछ कुरिन्थियों ने सदेह पुनरुत्थान को बहुत हलके में खारिज कर दिया था। पौलुस ने कुरिन्थ में जिन कठिनाइयों का सामना किया उनका यथावत वृतांत बनाना कठिन है। वर्तमान पाठक उनकी बस कल्पना ही कर सकते हैं, परन्तु कुछ कुरिन्थियों के विश्वासियों ने यह दावा किया होगा कि वे पुनरुत्थान का अनुभव कर चुके हैं। भ्रांति और जान-बूझ कर शिक्षाओं को बिगाड़ने के द्वारा उन्होंने यह दावा किया होगा कि पौलुस ने शिक्षा दी कि बपतिस्मा लेने का परिणाम नए जीवन में पुनरुत्थान है (देखें रोमियों 6:4)। क्योंकि वे अपने आप को जिलाया गया और मसीह के साथ बैठा हुआ समझते थी, इसलिए उन्हें अनैतिकता और पाप का कोई भय नहीं था। पौलुस ने इस धारणा का विरोध एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त को दोहराने के द्वारा किया; उसने यह सुस्पष्ट किया कि मसीहियों द्वारा किए जाने वाले अंगीकार को उनके नैतिक व्यवहार से पृथक नहीं किया जा सकता है।

कहावत, "**धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है,**"

वर्तमान काल तक अनेकों प्राचीन सांसारिक साहित्य रचनाओं से आई है। जिन शब्दों को यहाँ पौलुस ने उद्धृत किया है उनका श्रेय सामान्यतः अथेने के मेनैंडर (लगभग 300 ई.पू.) को दिया जाता है। यहाँ जिस "बुरी संगति" (ὁμιλίαι κακαί, *होमिलाई ककई)* पर विचार किया जा रहा है उसका सरोकार व्यक्ति द्वारा रखी गई संगति और परिणामस्वरूप उसकी आस्थाओं, से है। इसका KJV का अनुवाद, "बुरा संपर्क, शिष्टाचार को बिगाड़ देता है," में सत्य की झलक तो है; परन्तु प्रेरित का विषय बोले गए शब्दों से बढ़कर था। "अच्छा" विशेषण χρηστός *(ख्रेस्तौस)* का अनुवाद है, जो "नैतिकताओं" को परिवर्तित करता है। इस शब्द का सामान्य अर्थ "उपयोगी" होता है, परन्तु इस संदर्भ में इसका अर्थ है, *"नैतिक रूप में भला और परोपकारी"* है।[28] पौलुस ने अभिप्राय दिया कि बुराई से संगति रखना और उसका अनुमोदन करना - केवल मौखिक अनुमोदन मात्र भी, उस बुराई में सम्मिलित होना है। अनिवार्यतः, व्यक्ति के शब्द उसके जीवन के फलों में आ जाते हैं। यह अर्थ "इस्राएली और यूनानी संस्कृति के नैतिक आदर्शों के अनुसार है, जिसमें सामाजिक-राजनैतिक संस्कृति में उपयोगी होने को प्रदर्शित करते रहना होता था।"[29]

आयत 34. पौलुस ने कुरिन्थियों से आग्रह किया कि वे प्रभु के लौट कर आने पर होने वाले सदेह पुनरुत्थान के अपने मूर्खतापूर्ण विरोध को करना छोड़ दें। उसने लिखा, **धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो**। यूनानी भाषा का वर्तमानकाल संकेत करता है कि जब तक वे झूठे सिद्धांतों को सहन करते रहेंगे, मसीह के साथ उनके संबंध पर संकट रहेगा। पाप, चोरी करने या झूठ बोलने जैसे अपराधों तक ही, सीमित नहीं है। धारणाएँ भी पापमय हो सकती हैं, और उन धारणाओं को स्वीकार करना भी, जो आधारभूत सिद्धांतों का इनकार करती हैं। कुरिन्थियों के लिए यह लज्जा की बात थी कि उन्होंने उन शिक्षाओं के साथ समझौता और स्वीकृति दिखाई थी जो परमेश्वर के विषय अज्ञान को दिखाती थीं। पौलुस अपने पाठकों से, उनकी भलाई के लिए आग्रह करने को तैयार था। इसी प्रकार, जहाँ प्रशंसा के योग्य बातें थीं, वहाँ उसने प्रशंसा की और जब परिस्थिति असहमति मांगती थी तो वह असहमत हुआ। उसका उद्देश्य लोकप्रिय होना नहीं, परन्तु धर्मी होने के लिए इन भाइयों की अगुवाई करना था।

देहों के विभिन्न प्रकार (15:35-41)

[35]अब कोई यह कहेगा, "मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं?" [36]हे निर्बुद्धि! जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। [37]और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूँ का चाहे किसी और अनाज का। [38]परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है, और हर एक बीज को उसकी विशेष देह। [39]सब शरीर एक समान नहीं: मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है। [40]स्वर्गीय देह हैं

और पार्थिव देह भी हैं। परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और। [41]सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।

आयत 35. कुछ लोगों ने पुनरुत्थान के उनके इनकार का आधार उनके प्रतिद्वंदियों के द्वारा इसकी तर्कसंगत रूप से व्याख्या न कर पाने की अक्षमता को बनाया। कोई भी यह देख सकता था कि भौतिक देह सड़ जाती है। तो, इसे किस प्रकार, पुनः जीवित किया जा सकता था? गारलैंड का कथन आंशिक रूप से ठीक है:

> कुरिन्थियों की भूल की जड़ किसी स्वैच्छिक सैद्धांतिक बलवे में नहीं बल्कि निष्कपट भ्रम में है, जो उन्हें उनके यूनानी विश्व दृष्टिकोण ने दिया था। वे इस बात को समझ पाने में विफल हो गए कि एक सांसारिक देह जो कि भौतिक और नाशवान है उसे स्वर्गीय क्षेत्रों के लिए जो कि आत्मिक और अविनाशी हैं किस प्रकार उपयुक्त बनाया जा सकता है।[30]

निस्संदेह, भ्रम एक कारक था; परन्तु 15:34 में पौलुस का "पाप न करो" आदेश संकेत करता है कि इसमें भ्रम से कहीं अधिक सम्मिलित था।

पौलुस ने कुरिन्थियों को समझाने के लिए एक आलंकारिक शैली का उपयोग किया जिसे "अभियोगात्मक शैली" कहा जाता था। उसने एक काल्पनिक प्रतिद्वंदी के मुँह में सुखद शब्द रखे (देखें रोमियों 9:19; 11:19; याकूब 2:18) और इसके बाद तर्कों के साथ वार्तालाप किया। उसका उद्देश्य कुरिन्थियों को यह समझाना था कि परमेश्वर अपने लोगों में से प्रत्येक को एक स्वर्गीय देह देने में सक्षम है - एक ऐसी देह जिसमें एक आत्मिक क्षेत्र में अनन्त जीवन का अनुभव किया जा सकता है। यद्यपि इसके पीछे जो प्रश्न आता है उसे कुरिन्थ में कुछ लोगों के द्वारा वास्तव में उठाया गया होगा, पौलुस के मन में कोई विशेष व्यक्ति नहीं था। एक शंका करने वाला पूछ सकता था, **"मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं? और कैसी देह के साथ आते हैं?"** इस अध्याय में पहली बार, पौलुस ने "देह" शब्द का उपयोग करने का चुनाव किया। इन प्रश्नों में व्यक्त किया गए संदेह में बुद्धि की वास्तविकता से दिखावट अधिक थी। पौलुस ने अपने विषय में परमेश्वर के प्रकाशन के थोड़े से विचार के साथ, ज़ोर देकर कहा, उन्होंने ठान लिया था; और न ही उन्होंने सामान्य मानव अनुभव पर विचार किया।

आयत 36. पौलुस ने, कठोर, और ध्यान खींचने वाले शब्द **निर्बुद्धि** (ἄφρων, *एफ्रोन),* के साथ उन लोगों का सामना किया जो यह समझते थे कि उनके चतुराई पूर्ण प्रश्न पुनरुत्थान की किसी भी चर्चा को शांत कर देंगे। REB उसके उत्तर के प्रभाव को पकड़ती है: "कैसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न!"

आयत 37. पौलुस ने इन संदेहवादियों से मांग की और कहा कि वे अपने चारों और प्रकृति के द्वारा दिए गए उदाहरणों पर स्वयं दृष्टि करें। इसमें **तुम** दृढ़ है। पौलुस कह रहा था कि, "क्या तुम भी," "गेहूँ की डाली बोकर उससे एक गेहूँ

की डाली उपजाने की आशा नहीं करते।" जब एक बीज बोया जाता है, तो उसका सड़ना उसकी मृत्यु की मांग करता है; परन्तु यह प्रक्रिया नए जीवन को लेकर आती है। मृत्यु से जीवन फूट निकलता है। जो पौधा बीज के द्वारा उत्पन्न होता है वह बीज के समान नहीं है, फिर भी पौधे और बीज के मध्य निरन्तरता है। मनुष्यों को भी, जीवित रहने के लिए, मरना चाहिए। देह मर जाएगी, परन्तु इसके नाश में एक नई आत्मिक देह की सम्भावना सम्मिलित है। देह के नाश को एक शारीरिक जीवन के अंत की आवश्यकता नहीं है। जिन लोगों ने दैहिक स्वरूप में अनन्त जीवन की अवधारणा को अस्वीकार कर दिया था उनके द्वारा खड़े किए गए प्रश्न भौतिक संसार पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहे थे।

यीशु ने भी इसी से सम्बन्धित परन्तु एक भिन्न बात सिद्ध करने के लिए इसी सिद्धांत, अर्थात, मृत्यु से जीवन के फूट निकलने का उपयोग किया। जिस समय प्रभु के मरने का समय निकट था, तो कुछ यूनानी बोलने वाले यहूदी फसह पर आराधना करने के लिए अपने मार्ग पर थे। वे यीशु से मिलना चाहते थे। यूहन्ना के सुसमाचार में विवरण किए गए उसके रहस्यपूर्ण ढंग से, यीशु ने उन जिज्ञासु मनुष्यों को उनके दृष्टिकोण को बदलने के लिए कहा, उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

एक बीज का विनाश एक सुंदर पौधे के फूट निकलने में बाधा नहीं बनता। इसी प्रकार, मृत्यु और भौतिक देह के सड़ने को, एक ऐसी देह के पुनरुत्थान में जो कि उस देह से कहीं सुंदर है जो मर गई, बाधा बनने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर जो कि प्रकृति में रहस्यमय घटनाएँ करने में सक्षम है वह एक पुनरुत्थान की देह की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में भी सक्षम है। एक भौतिक जीवन के भागीदार होने के कारण, लोगों से कठिनाई से ही इस बात को समझने की आशा की जा सकती है कि भौतिक देह ऐसी दैहिक संरचनाओं में बदल जाएंगी जो आने वाले युग के अनुकूल हैं। एक बिंदु पर आकर विश्वासी पुरुषों और स्त्रियों को यह भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर उनकी देहों को उसी प्रकार बदल डालेगा जिस प्रकार वह एक निरा दाने, चाहे गेहूँ का चाहे किसी और अनाज को बदलता है, बिना यह जाने कि वह इसके लिए क्या माध्यम इस्तेमाल करता है। एक मानव समीक्षक एक मटर के दाने और कंकड़ का परीक्षण उन तात्पर्यों को समझे बिना कर सकता है कि सृष्टिकर्ता ने उनमें से एक को एक फलने वाले पौधे के रूप में बदल दिया जबकि दूसरा निष्क्रिय पड़ा रहता है। पौलुस ने तर्क दिया होगा कि मनुष्य की देह में एक मटर के दाने की क्षमता हैं, न कि एक कंकड़ की निर्जीवता।

आयत 38. जब एक बीज उगता है और एक नई देह को जीवन देता है, तो परमेश्वर कार्य कर रहा होता है। यह परमेश्वर ही है जो बीज को वह जीवन देता है जो उसके अपने नाश से फूट निकलता है। परमेश्वर प्रत्येक बीज को उसका अपना रूप प्रदान करता है; जिसका अर्थ है, कि वह निर्धारित करता है कि किस

प्रकार का पौधा बीज से उपजेगा। पौलुस ने कहना जारी रखा कि जब मसीही पुनरुत्थान की देह की प्रकृति पर विचार करते हैं, तो उन्हें परमेश्वर की चमत्कारी शक्ति को ध्यान में रखना चाहिए। वह ऐसे कार्य कर सकता है जो इस युग में रहने वालों के लिए अकल्पनीय हैं। देहों और बीजों के बीच जो निरन्तरता उत्पन्न होती है उसे अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। स्वर्गीय देहों को अब एक खांचे से नहीं बनाया जायेगा जिस प्रकार पार्थिव देह बनाईं गईं हैं। व्यक्तित्व बनाए रखा जाएगा।

प्रेरित के तर्क के लिए यह महत्वपूर्ण है कि एक बीज और एक परिणामी पौधा, यद्यपि एक दूसरे से काफ़ी भिन्न हैं, फिर भी वे दोनों भौतिक पदार्थ हैं। इनमें से कोई भी पूरी तरह से आत्मिक वस्तु नहीं है। वेन ग्रुडेम के द्वारा यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया:

> संक्षिप्त में, यदि यीशु और नए नियम के लेखक हमें यह सिखाना चाहते कि पुनरुत्थान की देह साधारणतः और महत्वपूर्ण रूप से अभौतिक थी, तो वे ऐसा कर सकते थे, परन्तु उन्होंने इसके बजाए बहुत से ऐसे स्पष्ट संकेत दिए कि यह साधारणतः शारीरिक और भौतिक थी, और सदा के लिए निर्बलता, बीमारी, और मृत्यु से स्वतंत्र किया गया था, तो भी यह साधारणतया शारीरिक और भौतिक थी।[31]

आयत 39. इस बिंदु पर पौलुस की उपमाएँ, यदि उनमें तर्क नहीं थे, बदल गईं। वनस्पति संसार से पशु संसार की और कूच करके, उन बिन्दुओं का अनुपूरण करने के लिए जो उसने अभी कहे थे प्रेरित ने अन्य तर्क दिए। जिस प्रकार परमेश्वर ने पौधा जीवन को बहुत से रूप दिए हैं, प्रत्येक बीज एक विशेष प्रकार का पौधा उत्पन्न करता है, इसलिए **सब शरीर एक समान नहीं: मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है।** बीजों और जिन पौधों को वे उपजाते हैं उनका उदाहरण देने के द्वारा, पौलुस ने इस बात को प्रस्तुत किया कि परमेश्वर एक देह को इस प्रकार बदलने में सक्षम है कि वह भौतिक भी रहे और उसका एक अलग रूप और कार्य हो। विभिन्न प्रकार के शरीरों का उदाहरण देते हुए, प्रेरित ने स्वयं प्रकृति का उपयोग ये चित्रण करने के लिए जारी रखा कि परमेश्वर ने प्रत्येक जीवन के स्वरूप की आवश्यकता में उपयुक्त होने के लिए भिन्न परन्तु एक समान तत्वों को बनाया है। परमेश्वर ऐसे तत्वों से एक ऐसी स्वर्गीय देह की रचना करेगा जो एक स्वर्गीय जीवन के लिए उपयुक्त होगी।

15:39 में मुख्य शब्द "शरीर"; और 15:40, 41 में मुख्य शब्द "महिमा" है। जिस प्रकार पशु संसार में अलग-अलग प्रकार के शरीर होते है, उसी प्रकार पार्थिव देहों और आकाश के तारागणों की महिमा में अंतर है। जिन लोगों को प्रेरित पौलुस ने सम्बोधित किया था, उन्होंने संदेह किया था या कम से कम प्रश्न पूछा था, कि क्या भौतिक वस्तुओं और जो भी देह की मृत्यु के बाद बचता है उनके बीच में कोई निरन्तरता थी। उन्होंने अपने विषय में यह सोचा कि वे शरीर

में आत्माओं के रूप में गाड़े गए थे और उसकी सीमाओं के अधीन थे, तो उन्होंने मृत्यु को देह से स्वतंत्र होने के रूप में देखा। पौलुस ने इस प्रकार की सोच को अस्वीकार किया। वह ये जानता था कि परमेश्वर ने आरम्भ में, भौतिक वस्तुओं की रचना की और उन्हें अच्छा कहा (उत्पत्ति 1:31)।

आयत 40. परमेश्वर की महिमा ने स्वयं को स्वर्गीय देह और पार्थिव देहों के साथ जोड़ लिया। एक वृक्ष या एक पर्वत की महिमा चाँद और तारों की महिमा के समान नहीं है, परन्तु प्रत्येक अपने ही ढंग से सृष्टिकर्ता की बुद्धि और शक्ति का प्रदर्शन करता है। जिस प्रकार परमेश्वर भौतिक देहों में महिमा प्रदान करने के योग्य था, उसी प्रकार परमेश्वर देहों के उसके स्वयं के स्वरूप को जो स्वर्गीय क्षेत्र में सदैव जीवित रहेंगे महिमा प्रदान करने के योग्य है।

आयत 41. पौलुस सांसारिक परिदृश्य की महिमा पर बना नहीं रहा, जबकि वह ऐसा कर सकता था। उसने इसके बजाए, अपना ध्यान स्वर्ग की महिमा पर लगाया। इसमें विविधता प्रत्यक्ष है। उसने कहा, **सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।** परमेश्वर एक प्रकार की देह या एक प्रकार की महिमा तक सीमित नहीं है। जिस प्रकार वैज्ञानिक ज्ञान ने वृद्धि की है, उससे माँस-और लहू-की देह और प्रत्यक्ष हो गईं हैं। देह अब भी बूढ़ी होती और सड़ती हैं। पार्थिव देह रोगों और मृत्यु के अधीन हैं। पौलुस ने तर्क दिया कि परमेश्वर ऐसी देहों का निर्माण करने के योग्य हैं जो उन सीमाओं से रहित हैं जो हाडमाँस में प्रत्यक्ष हैं। उसने अपने तर्क को स्वर्गीय क्षेत्रों में प्रकट होने वाली अपरिवर्तनीय महिमा की ओर संकेत करते हुए बताया। उसने माँस की दुर्बल देहों के विरुद्ध अपरिवर्तनीय तारों को रखा। परमेश्वर के पास पार्थिव देहों को स्वर्गीय देहों में बदलने की शक्ति और बुद्धि है। देह की सीमाएँ इस बात का तर्क नहीं देती कि स्वर्गीय क्षेत्रों में दैहिक अस्तित्व असम्भव है।

पौलुस ने पहले ही पहले आदम और दूसरे आदम यीशु मसीह के मध्य समानताओं की ओर संकेत किया था (15:22)। रोमियों को लिखे उसके पत्र में, जिसे कुछ वर्षों बाद लिखा गया था, इन दो बातों के मध्य अधिक सम्पूर्णता से समानताएँ विकसित होती हैं। रोमियों 5:14-19, में पौलुस ने आदम के पाप को उस छुटकारे के दृष्टिकोण में दोहराया जो कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का परिणाम था। 1 कुरिन्थियों में उसने दिखाया कि फिर से जीवित हुआ मसीह छुड़ाए हुओं के पुनरुत्थान के लिए एक नमूना है। मसीह की पुनरुत्थान की देह प्रत्येक मसीह के लिए एक पुनरुत्थान की देह का आश्वासन है।

यद्यपि मसीह की देह वही देह थी जो कब्र में गई थी, परन्तु इसे महिमान्वित रूप से बदल दिया गया था। पुनरुत्थान की देह में माँस और लहू की देह से निरन्तरता और अलगाव दोनों होगा। ये सत्य उतना ही दूर है जितना दूर विश्वास की आँखें देख सकती हैं।

अंतिम आदम (15:42-49)

[42]मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशवान दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है। [43]वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है। [44]स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। [45]ऐसा ही लिखा भी है, कि "प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम जीवित प्राणी बना" और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। [46]परन्तु पहले आत्मिक न था पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ। [47]प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। [48]जैसा वह मिट्टी का था, वैसे ही वे भी हैं जो मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। [49]और जैसे हम ने उसका रूप धारण किया जो मिट्टी का था वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे।

आयत 42. पौलुस ने **मरे हुओं के पुनरुत्थान पर** विश्वास को दार्शनिक अटकलों से मिश्रित नहीं किया था। यह सत्य कि परमेश्वर के पास शक्ति, ज्ञान है, और वह शारीरिक को आत्मिक में बदलेगा यह देहों के विभिन्न प्रकारों और स्वाभाविक देहों में प्रत्यक्ष महिमा के द्वारा प्रमाणित है। मनुष्यों की बुद्धि भूल से भौतिक वस्तुओं की तुलना, बुरी और गिर चुकी वस्तुओं से, मानव बुद्धि की अपूर्णता का प्रदर्शन करते हुए करती है (2:5)।

पृथ्वी पर जीवन के लिए परमेश्वर के द्वारा बनाई गई देह, के विषय में प्रेरित ने कहा कि, वह **बोई गई है।** इसी कारण यह **नाशवान** (φθορᾶ, *फ्थोरा)* है। जो अनन्त जीवन के लिए जी उठता है उसे **अविनाशी** (ἀφθαρσία, *अफ्थरसिया)* होने के लिए रचा गया है। KJV, और NASB के प्रकाशनों की एक टिप्पणी में, इन शब्दों का अनुवाद "भ्रष्ट आचरण में" और "पवित्र आचरण" करते हुए एक प्रकार का अलग विचार प्रदान करती है। "भ्रष्ट आचरण" में परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करने की एक प्रवृत्ति सम्मिलित हो सकती है, यह केवल इस बात का सुझाव दे सकती है पार्थिव देह भौतिक नाश के अधीन है। चूंकि पौलुस की चिंता यहाँ पर पाप की दूषित करने वाली शक्ति के विषय में प्रकट नहीं होती, तो NASB और NIV का अनुवाद अधिक बेहतर है। जो "बोया गया है" वे ऐसी देह हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए इस संसार में होने के लिए बनाया है।

आयत 43. पौलुस ने पार्थिव देह और जिस देह को जिलाया जाएगा उसकी तुलना करना जारी रखा। वर्तमान युग की पार्थिव देह **अनादर और दुर्बलता में बोई जाती हैं।** पुनरुत्थान में, देह इस प्रकार बदल जाएँगी कि वे महिमा और सामर्थ को प्रकट कर सकें। माँस की देहों में घमंडी को नम्र बनाने का एक तरीका है। एक घमंडी देह को एक आयु के द्वारा एक दुर्बल देह में बदल दिया जाता है; ताकि एक स्पष्ट मन भयग्रस्त और भ्रमित हो सके।

प्रेरित उस माँस-और लहू-की देह के किसी अधूरे पुनरुत्थान का तर्क नहीं दे

रहा था जो कब्र में चली गई थी। संदेह करने वाले पूछते हैं कि एक ऐसे मनुष्य का क्या होगा जो समुद्र में मरा और मछलियों के द्वारा खा लिया गया और इसके बाद उन्हें किसी अन्य व्यक्ति ने खा लिया। वे यूनानी दार्शनिकों के समान ही भूल में पड़ चुके थे जो ये सोचते थे कि आत्माएं देहों में कैद थीं। न तो प्राचीन और न ही आधुनिक संशयवादियों ने परमेश्वर के द्वारा मरे हुओं के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में कोई दुर्गम समस्या प्रस्तुत की है। परमेश्वर स्वयं को सांसारिक स्रोतों तक सीमित नहीं करता। मरे हुए के पुनरुत्थान में वैज्ञानिकों के द्वारा अध्ययन किए गए उसी प्रकार के परमाणुओं और अणुओं की आवश्यकता नहीं पड़ती।

आयत 44. अधिकतर मामलों में, अर्थ को एक भाषा से दूसरी भाषा में कम से कम गड़बड़ी के साथ अनुवादित किया जा सकता है; परन्तु यह वाक्यांश **स्वाभाविक देह** (σῶμα ψυχικόν, *सोमा सुखिकोन)* कठिन है। पौलुस ने विशेषण ψυχικός *(सुखिकोस)* का उपयोग जीवन के उन गुणों की और ध्यान ले जाने के लिए किया जो मानव सीमाओं से बंधे हुए हैं। गुण "दैहिक" और "माँस" के रूप में परस्पर व्याप्त हैं, परन्तु ये किसी की तुलना में अधिक व्यापक हैं। रिचर्ड ई. ऑस्टर, जूनियर ने तर्क दिया,

> "स्वाभाविक" शब्द इसके बाद आने वाले सभी शब्दों (15:42-43) जैसे कि नाशवान, अनादर, और दुर्बलता से जुड़ी हुई अवधारणाओं की संक्षिप्त व्याख्या करता है, यद्यपि "आत्मिक" शब्द अविनाशी, महिमा, और शक्ति जैसे विचारों से जुड़ा हुआ है।[32]

पुनरुत्थान की देह पार्थिव देह में निहित दुर्बलताओं के द्वारा सीमित नहीं होगी; परन्तु जब पौलुस ने कहा कि आने वाले युग में देह **आत्मिक** होगी, तो वह यह नहीं सीखा रहा था कि यह अभौतिक होगी। यद्यपि पार्थिव देह संसार के जीवन की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त है, उसी प्रकार आत्मिक देह भी आत्मिक जीवन की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त होगी। परमेश्वर ने आत्मिक देह के विषय में और अधिक प्रकट न करने का चुनाव किया है; परन्तु प्रेरित ने इस बात पर ज़ोर दिया कि, जिस प्रकार एक पार्थिव देह निश्चित है, उसी के समान एक आत्मिक देह भी होगी।

एक प्रकार की देह के बिना अस्तित्व की कल्पना करना कठिन है। सम्भवतः एक देहमुक्त आत्मा की स्थान के मापदण्डों में कोई सीमा नहीं होगी। क्या स्थान के मापदण्डों के बिना अस्तित्व विचारयोग्य है? ऑगस्टीन ने प्लेटोवादी दार्शनिकों का सामना उस दावे में सम्मिलित विरोधाभास के साथ किया कि जब आत्माएं भौतिक शरीरों से स्वयं को मुक्त कर लेती है तो वे स्वतंत्र और धन्य हो जाती हैं। ऑगस्टीन ने लिखा, "... धन्यता को प्राप्त करने के लिए हमें सभी प्रकार कि देहों से मुक्त होने की आवश्यकता नहीं, इस प्रकार की देहों के समान नहीं जिन्हें परमेश्वर की भलाई के रूप में पहले मनुष्य के लिया रचा गया था, बल्कि केवल विनाशी, बोझिल, पीड़ादायक, मर रही, परंतु केवल वे जो मनुष्य के पाप के कारण उत्पन्न हुईं थीं।"[33]

आयत 45. आदि में, परमेश्वर ने जब मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाने का निश्चय किया, तो उसने मानव को इस पृथ्वी पर जीने के लिए एक उपयुक्त देह के साथ बनाया। यह कहने के बाद कि परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की रेत से बनाया और उसके नथुनों में श्वास फूंका, पवित्रशास्त्र कहता है, "मनुष्य जीवित प्राणी बन गया" (उत्पत्ति 2:7)। पौलुस ने उत्पत्ति की भाषा वर्णन और अनुकूलन यह अध्ययन करने के लिए किया कि, **"पहला मनुष्य, आदम, एक जीवित प्राणी बन गया।"** आदम एक इकाई था, एक देह और एक आत्मा गूढ़ रूप से एक सम्पूर्ण इकाई में गूँथा हुआ। एक देह आत्मा की अनुपस्थिति में एक ऐसे वृक्ष के समान है जो लकड़ी और फूलों और पत्तियों से रहित हो। आदम और उसके वंश को एक देह-और-आत्मा की इकाई के रूप में परिभाषित किया जाना था।

जब पौलुस ने 15:44 में "स्वाभाविक देह" (σῶμα ψυχικόν, *सोमा सुखिकोन)* और "आत्मिक देह" (σῶμα πνευματικόν, *सोमा न्युमातिकोन)* मध्य भेद किया तो उसने नपुंसक लिंग के एकवचन विशेषण का उपयोग किया; परन्तु 15:45 में वह पहले और **अंतिम आदम** के व्यक्तित्व की ओर ध्यान ले जाना चाहता था। पहले आदम और दूसरे आदम के द्वारा किए गए चुनाव और उनके परिणाम कुल मिलाकर मानव परिवार के लिए भिन्न थे। "पहला ... आदम" "एक जीवित प्राणी" (ψυχὴν ζῶσαν, *सुखेन ज़ोसान)* बना क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा थी। पाप के आगमन से पहले, आदम के एक प्राणी रूप में किसी दुर्बलता या अनादर को कोई सुझाव नहीं मिलता (15:43)। पाप का अर्थ पार्थिव, संयुक्त प्राणी, आदम के लिए मृत्यु था (15:21, 22)। "अंतिम आदम" ने एक **जीवनदायक आत्मा** (πνεῦμα ζῳοποιοῦν, *न्युमा ज़ूपोइऔन)* के रूप में मानव परिवार को छुटकारा दिया है। NASB के अनुवादकों ने यदि "जीवनदायक-आत्मा" वाक्यांश का अनुवाद करते समय बड़े अक्षरों का उपयोग किया होता तो अच्छा किया होता। पहला आदम उस जीवित आत्मा के लिए जो परमेश्वर ने उसे होने के लिए बनाया था मृत्यु ले आया। अंतिम आदम, एक "जीवनदायक आत्मा", ने आत्मिक देह को अनन्तकाल में जीवन के लिए खरीद लिया है।

आयत 46. प्रेरित केवल अपने तर्क का सहारा लेने की खोज में था कि एक आत्मिक **देह** एक **स्वाभाविक** देह की और संकेत करती है जो उसके पहले थी। गारलैंड ने इसे इस प्रकार देखा:

> इस वाक्यांश में पौलुस का तर्क का कुरिन्थियों की आत्म-केन्द्रित आत्मिकता से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु इसका सम्बन्ध उनके इस बात पर आश्चर्य करने से था कि एक लौकिक देह को किस प्रकार एक स्वर्गीय देह के रूप में जीवित किया जा सकता है।[34]

एक व्यक्ति के मृत्यु और अंत में प्रभु के प्रकट होने के समय के मध्य में एक व्यक्ति होश में रहेगा या नहीं पौलुस ने साधारणतः इस विषय पर बात नहीं की। कम से कम, उसने ऐसा 1 कुरिन्थियों 15 में तो नहीं किया; और हो सकता है कहीं और भी नहीं किया। ऑस्टर ने कुरिन्थियों के मरणोत्तर जीवन के विश्वास

को पौलुस के पुनरुत्थान के बाद के जीवन के विश्वास से अलग किया।

> आत्मिक देह ... एक विश्वासी का उसकी मृत्यु के बाद उसकी स्थिति और दशा का उल्लेख नहीं करती, बल्कि केवल अंत में मसीह के पुनः आगमन के समय की देह का उल्लेख करती है।[35]

आयत 47. पौलुस ने पहले आदम और अंतिम आदम के बीच निरन्तरता को दिखाया। जो देह पाप के द्वारा कलंकित हो चुकी है और इसके कारण दुर्बलता और अनादर के अधीन हैं उसे मसीह के द्वारा एक महिमा और सामर्थ्य की देह में बदला जायेगा। स्वर्ग का जीवन इस संसार के जीवन के ही समान होगा, जिसमें एक दैहिक अस्तित्व सम्मिलित है।

जिन्होंने पुनरुत्थान को अस्वीकार किया था उन लोगों की भूल यह थी कि उन्होंने सभी प्रकार के संयुक्त अस्तित्व को एक समान समझ लिया था। पौलुस ने उन्हें ये भरोसा दिलाया कि आदम के प्रतीकात्मक रूप में इस पृथ्वी पर भौतिक देह, उस आत्मिक देह के तत्व और स्वभाव से भिन्न है, जो पुनः जीवित हो चुके यीशु में साकार है। "आदम" का अर्थ ही भूमि का है। पौलुस ने अपनी बात को **पहले मनुष्य,** आदम की देह, जिसे भूमि (ἐκ γῆς χοϊκός, *एक्गोस खोइकोस, "भूमि का, मिट्टी का")* से बनाया गया था की तुलना, **दूसरे मनुष्य,** यीशु की पुनरुत्थान की देह से की, जिसे स्वर्ग (ἐξ οὐρανοῦ, *एक्स औनौ)* में बनाया गया था। उसके मानव रूप के समय के दौरान यीशु की देह का सम्बन्ध पौलुस की टिप्पणी से नहीं था। रिडरबोस ने इसे अच्छे से कहा:

> वे [शब्द *एक्स औनौ*] उसके पूर्व-अस्तित्व के गुण के द्वारा उसकी मानवता के स्वर्गीय मूल के बारे में बात नहीं कर रहे थे, परन्तु उसके पुनरुत्थान के गुण के द्वारा मानवता के आत्मिक, स्वर्गीय स्वभाव के विषय में बात कर रहे थे।[36]

इसकी भाव यह है कि दूसरा मनुष्य, जो कि, पुनः जीवित यीशु है, वह **स्वर्ग से** है या "स्वर्ग का है" (NIV)। वह "स्वर्ग का" उसके मृतकों में से जी उठने के कारण है। विश्वासयोग्य लोग अपने पुनरुत्थान में, उसके "स्वर्ग का" होने में सहभागी होंगे, "जो कि, उस पुनरुत्थान में है जो मसीह में पहले से ही आरम्भ हो चुका है। वर्तमान के लिए, यीशु परमेश्वर की उपस्थिति में अपनी मानवता की मुहर को लिए हुए है (देखें फिलिप्पियों 3:20, 21)। पौलुस यीशु मसीह की पुनरुत्थान से पहले की पार्थिव देह के विषय में कोई बात नहीं कर रहा था। वह यह नहीं कह रहा था कि यीशु अपने मानव रूप में एक स्वर्गीय मनुष्य था, जैसा कि कुछ आत्मज्ञानी सिद्धांतों ने दावा किया था। उसके पृथ्वी पर होने के समय उसकी भौतिक देह ने आदम के सभी वंशजों के द्वारा भाग ली गई मानवता में हिस्सा लिया।

आयत 48. पौलुस ने मानव अस्तित्व के केवल दो तरीकों की कल्पना की थी। पहला इस संसार में इस पृथ्वी से बनी हुई **मिट्टी की** (ὁ χοϊκός, *हो खोइकोस)* एक देह में जीवन जीना है। दूसरा स्वर्ग में एक ऐसी देह में जीवन

जीना है जो उस वस्तु से बनी है जो **स्वर्गीय** (ὁ ἐπουράνιος, *हो एपुरानिओस)* है। जिस बात को प्रेरित ने छोड़ दिया, वह ये है कि भौतिक मृत्यु और अंत में प्रभु के आगमन के बीच के समय अस्तित्व में - तथाकथित "मध्यम स्थिति" अस्तित्व का होना। नए नियम में पौलुस और अन्य लोगों के द्वारा कहे गए कथनों पर विचार किया जा सकता है (देखें 2 कुरिन्थियों 5:1-10; फिलिप्पियों 1:23; 3:20, 21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17); परन्तु जब सब बातें परखी जा चुकीं हैं, तो मध्यम अस्तित्व के साथ अब भी बहुत से प्रश्न जुड़े हुए हैं। क्या प्रभु के वापस आने से पहले बहुत से मरे हुओं का "नंगा" होना (2 कुरिन्थियों 5:2, 3) इस वाक्यांश का एक अनुवाद है? यह इस परिच्छेद की एक व्याख्या है। प्रश्न अंतहीन हैं, और अभी उत्तर काल्पनिक हैं। जॉन मैकरे तब ठीक थे जब उन्होंने इन उत्तरों को लिखा कि उत्तर "... विश्वास और देह के पुनरुत्थान और यीशु मसीह से पुनर्मिलाप की अंतिम आशा में जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं हैं।"[37]

आयत 49. जिस **मिट्टी के रूप** को हमने वर्तमान समय की माँस की देहों में हमने धारण किया है। **स्वर्गीय रूप** प्रभु के पुनरुत्थान की देह के क्रम के अनुसार बनाया जाएगा (फिलिप्पियों 3:20, 21)। इस युग में धर्मी जीवन जीने की चेतावनी पौलुस के पत्र की पृष्ठभूमि में अधिक दूर नहीं है। प्राचीन लेखों की ठोस संख्या में भविष्यसूचक φορέσομεν (*फोरेसेमोन*, "हम सहेंगे") की बजाए, संबोधन में एक उपदेशक क्रिया संशयार्थ सूचक शब्द φορέσωμεν (*फोरेसेमोन*, "हमें सहने दे") का उपयोग करते हैं। इसका पहला अध्ययन परिस्थिति में ठीक बैठता है, परन्तु शाब्दिक प्रमाण इसके बाद की बातों का पक्ष लेता है। यदि हम बाद के अध्ययन को स्वीकार करें, तो पौलुस हमें जीवन के उस तरीके को अपनाने को कह रहा था जो जिसे स्वर्गीय मसीह ने अपने लोगों को अनन्तकाल की तैयारी में जीने के लिए बुलाया है।

पुनरुत्थान का रहस्य (15:50-57)

[50]हे भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। [51]देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे, [52]और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। [53]क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। [54]और जब यह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: "जय ने मृत्यु को निगल लिया। [55]हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?" [56]मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है। [57]परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु

मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। 58इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

पौलुस का मरे हुओं की "मध्यम स्थिति" के विषय में जितना कम कहा उसके सम्भावित तौर पर दो महत्वपूर्ण कारण रहे होंगे। पहला ये कि, प्रेरित परमेश्वर की ओर से प्रकाशन पर निर्भर था। इस विषय में, उसे स्पष्ट तौर पर कम ही प्राप्त हुआ था। दूसरा यह कि, पौलुस प्रभु के शीघ्र आगमन की आशा कर रहा था। उसे ऐसी आशा थी कि उसके समकालीन मसीहियों की भौतिक मृत्यु और युग के अंत के मध्य में अधिक समय नहीं बीतेगा।

1 थिस्सलुनीकियों का लेखन सम्भावित तौर पर 1 कुरिन्थियों के लगभग चार वर्षों के बाद हुआ था। जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को लिखा, उसने प्रभु के आगमन पर जीवित लोगों के बीच में रहने की आशा की होगी। उसने लिखा, "... और हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4:15)। 1 कुरिन्थियों में, और अधिक प्रकाशन के बाद, सम्भवतः उसे इस बात की सम्भावना का ज्ञान हो गया होगा कि उस घटना के लिए वह जीवित नहीं बचेगा। उसने लिखा, "हम सब नहीं सोयेंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे" (15:51)।

नए नियम में मसीही प्रभु के आगमन की बाट जोह रहे थे। याकूब ने लिखा, "तुम भी धीरज धरो; और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है ['हाथ पर ही है'; NKJV]" (याकूब 5:8)। पतरस ने अपने पहले पत्र में कहा, "सब बातों का अंत तुरन्त होने वाला है" (1 पतरस 4:7)। यह केवल ये नहीं है कि प्रभु वापस आएगा; उन विश्वासियों के लिए, जो प्रतिदिन उस घटना की आशा में जीते थे। केवल यह नहीं कि वह आ रहा है, परन्तु, एक प्रसिद्ध गीत के शब्दों में, "यीशु शीघ्र वापस आ रहा है।"[38] कलीसिया का यह सिद्धांत है कि वह शीघ्र वापस आ रहा है, और इसके बाद सभी बातें बदल जाएंगी।

आयत 50. पौलुस अपने तर्कों को समेटने के लिए तैयार था। यद्यपि उसने यह स्पष्ट कर दिया था कि एक पुनरुत्थान की देह होगी, उसने यह भी कहा था कि पुनरुत्थान की देह माँस-और लहू के देह के समान नहीं होगी जो अब मनुष्य के अस्तित्व को सीमित करती है। यह देह नाशवान है, परन्तु पुनरुत्थान की देह अविनाशी होगी। एक नाशवान देह अनन्त या अविनाशी स्थान में, जो कि परमेश्वर का राज्य है, अधिकारी नहीं होगी। पौलुस के लिए एक भौतिक देह नकारात्मक तात्पर्य नहीं था जैसा कि यूनानी विचारकों के लिए था।

जब "देह" शब्द, की तुलना माँस से की जाती है, तो यह एक मनुष्य को अस्तित्व के दो तरीकों में दर्शाती है। इसके सन्दर्भ में जहाँ केवल यही शब्द विचाराधीन है, प्रेरित ने इस परिभाषा को बिना भेद के उपयोग किया है (उदाहरण के लिए, रोमियों 2:28 में, जहाँ "माँस" "देह" के समान है)। अन्य वाक्यांशों में, वे मनुष्य को दो भिन्न दृष्टिकोणों से वर्णित करते हैं। पौलुस ने

"माँस" शब्द का उपयोग तब किया जब वह मनुष्य को उसकी दुर्बलता और अनिश्चय में प्रस्तुत करना चाहता था। यद्यपि प्रेरित एक देह के बिना पुनरुत्थान की कल्पना नहीं कर सका, उसने कभी भी हाडमाँस के पुनरुत्थान का उल्लेख नहीं किया।

जेम्स डी.जी. डन ने इसे इस प्रकार कहा:

> हमारा माँस से बना होना निरे मनुष्य के रूप में हमारी अस्थिरता और दुर्बलता, मृत्यु से न बच पाने की हमारी असमर्थता, भूख और अभिलाषाओं पर हमारी निर्भरता, इन भूख और अभिलाषाओं में हेरफेर करने के प्रति हमारी अति संवेदनशीलता की पुष्टि करता है।[39]

मानव अस्तित्व पर ध्यान रखते हुए "देह" शब्द का उपयोग "माँस" की तुलना में अधिक सकारात्मक है। पौलुस और पुराने नियम के प्रकाशन इस समझ में एक समान थे कि एक देह का होना इसका एक अंतर्निहित पहलू है कि एक जीवित आत्मा होने का क्या अर्थ है।

जोआकीम जेरेमिअस ने 15 अध्याय के अंतिम पदों में पौलुस के संक्षिप्त विवरण को इन बातों के मध्य अंतर में देखा कि प्रभु के आगमन का जीवितों के लिए क्या अर्थ होगा और उनके लिए इसका क्या अर्थ होगा जो मर चुके हैं।[40] जेरेमिअस के अनुसार, प्रेरित की मंशा "माँस और लहू" से उन लोगों का उल्लेख करने की थी जो जीवित हैं, और उसने जो मर चुके हैं उनकी तुलना के लिए "नाशवान" (φθορά, *फ्तोरा,* "नाशवान"; KJV)का उपयोग किया। 15:53 में "नाशवान" एक बार फिर से वही लोग हैं जो प्रभु के आगमन से पहले मरते हैं, और "मरणहार" वे लोग हैं जो जीवित बचे रहते हैं। पौलुस ने एक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि किस प्रकार प्रभु का पुनः आगमन जीवितों और मरे हुओं को पुनरुत्थान में भागी बनाएगा। जेरेमिअस का प्रस्ताव प्रेरित के तर्क के लिए एक स्वीकार्य व्याख्या है, परन्तु इस अध्याय में कोई भी बात यह संकेत नहीं करती कि कुरिन्थ के लोग उन लोगों की चिंता से व्याकुल थे जो प्रभु के आगमन से पहले मर जाते हैं। इसकी कोई सम्भावना नहीं है कि हमें थिस्सलुनीके के मसीहियों के प्रश्नों को कुरिन्थ में आयात करना चाहिए (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:13)।[41]

आयत 51. पुनरुत्थान की देह का स्वभाव और वह प्रक्रिया जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग मरणहार देह को अविनाशी से बदल लेंगे यह नाशवान समझ के परे है; **यह एक रहस्य है।** प्रेरित ने प्रभु की ओर से प्रकाशनों के एक स्तर को प्राप्त किया था जिसने रहस्यों से एक भाग में ही पर्दा उठाया था। कुछ विश्वासी प्रभु के आगमन पर जीवित रहेंगे। सभी लोग नहीं मरे होंगे' परन्तु जब प्रभु वापस आएगा तो चाहे जीवित या मरे हुओं के बीच में, सभी बदल जाएंगे। हाडमाँस की मरणहार देह एक पुनरुत्थान की देह में बदल दी जाएगी। यूनानी विचारक जिन्होंने इस सिद्धांत के ऊपर एक दैहिक पुनरुत्थान को अस्वीकार कर दिया कि भौतिक स्वाभाविक तौर पर नाशवान है वे गलत थे। आदि से ही, परमेश्वर ने भौतिक कायनात को अच्छा कहा था। हम सभी बदल जाएंगे मसीहियों के लिए

आने वाले युग में अभौतिक होने पर ज़ोर नहीं देता।

आयत 52. जब अंत आएगा, और समय समाप्त हो चुका होगा। प्रभु का पहला आगमन एक ऐसे युग के अंत के पूर्वाभास की प्रक्रिया और अनुमानों पर हुआ। दूसरा आगमन (इब्रानियों 9:28) अलग प्रकार का होगा। वह अचानक से आ जाएगा, जिस प्रकार रात में एक चोर आता है (मत्ती 24:43; लूका 12:39; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10)। विश्वास, पश्चाताप, और आशा का समय समाप्त हो चुका होगा। एक क्षण में (ἐν ἀτόμῳ, *एन अटोमो),* पलक झपकते ही, परमेश्वर की शक्ति के द्वारा बदलने वाली घटनाएँ होने लगेंगी। यहाँ पर इस्तेमाल किए गया यूनानी शब्द को अंग्रेजी वक्ताओं ने उधार लिया, और इसे तत्व पर लागू किया, और भौतिक अस्तित्व के निर्माण के खाँचें "परमाणुओं" का नाम दिया।

प्रेरित ने अपने पाठकों पर घटनाओं के अपने आप होने के प्रभाव को छोड़ना समाप्त नहीं किया था। उसने अंत में बजाई जाने वाली एक तुरही की एक उपमा का उपयोग किया (देखें मत्ती 24:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। उसने कहा, जब तुरही का शब्द होगा, तब मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, जो जीवित हैं वे बदल जाएंगे, और हम सभी बदल जाएंगे। पुनरुत्थान की देह हाडमाँस की कमियों को पीछे छोड़ देगी। और परिणाम एक स्वर्गीय, अविनाशी देह होगी।

पौलुस कुछ बातों के विषय झूठी शिक्षाओं - उदाहरण के लिए - उठा लिया जाना या मसीह के पृथ्वी में एक हजार वर्ष तक राज्य करने का खंडन करने के लिए नहीं रुका। उसने सुनहरी सड़कों और चौकोर नगर के विवरण को यूहन्ना के अंत के समय के दर्शनों की कविताओं पर छोड़ दिया (प्रकाशितवाक्य 21:16-21)। विश्वास के इस युग में, परमेश्वर के लोगों को साधारण तौर पर उस पर भरोसा रखना है "जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (इफिसियों 3:20)। प्रेरित का विचार विश्वासियों के लिए इस बात को स्थापित करना था कि जिस अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने मसीह में की है उसमें दैहिक अस्तित्व निहित है। इस सन्दर्भ में, जो लोग मसीह से बाहर हैं उनके लिए कहने हेतु कोई बात नहीं थी। उसकी चिंता बचे हुओं के विषय में थी।

आयत 53. प्रेरित ने इसके आगे उस बात को सकारात्मक रूप से कहा जो उसने 15:50 में नकारात्मक रूप से व्यक्त की थी। यदि देह का स्वरूप बदल जाएगा, पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मसीही तब क्या हैं जब वे प्रभु के आगमन की बाट जोहते हैं और जब तुरही बजाई जाएगी उस समय वे क्या होंगे इनके बीच एक निरन्तरता है। **क्योंकि अवश्य है कि ये नाशवान देह अविनाश को पहन ले।** पौलुस के अनुसार, इस युग में और आने वाले युग में अस्तित्व में, देह और आत्मा की एकता सम्मिलित होती है।

आयत 54. अन्यजातियों के प्रेरित ने मंडराने वाली आत्माओं के साथ एक देहरहित अस्तित्व या एक "संसार आत्मा" में सोख लिए जाने का चित्रण नहीं किया। दैहिक अस्तित्व का कोई भी प्रश्न इस कथन में नहीं ठहरता कि यह

मरणहार [अवश्य] अमरता को पहन ले। किसी दूसरे स्थान पर पौलुस ने एक मसीही बनने को मसीह को पहन लेने की उपमा के साथ लिखा। यह एक वस्त्र को धारण करने के समान है। जब पुनरुत्थान विषय है, तो "पहन लेना" अनन्त अस्तित्व की तैयार के लिए एक बदलाव करने का संकेत देता है। किस प्रकार वे जो जीवित हैं प्रभु के पुनः आगमन पर एक देह को दूसरी के लिए बहा देंगे और किस प्रकार मरे हुओं को एक पुनरुत्थान की देह पहनाई जाएगी ये पौलुस की तत्काल रुचि के क्षेत्र से बाहर थे।

जब तुरही बजेगी और "मरणहार" को "अमरता" से बदल दिया जाएगा, यह समय के आरम्भ से परमेश्वर के प्रकाशन की पूर्णता में होगा। प्रेरित का यशायाह 25:8 को दोहराना संक्षिप्त है परन्तु एक दम सटीक है: **कि "जय ने मृत्यु को निगल लिया।"** यह असम्भव है कि पौलुस अपने पाठकों को प्रभु के *परुसिया*, से लेकर उस क्षण तक जब अंतिम तुरही बजाई जाएगी, उसके सन्दर्भ में यशायाह के शब्दों को समझाना चाहता था। भविष्यद्वक्ता के सन्दर्भ में उन शब्दों का अपना ही अर्थ था, परन्तु पौलुस ने इन शब्दों को उन घटनाओं के लिए उपयुक्त पाया जिनका वर्णन वह कर रहा था। (देखें 15:27 की टिप्पणियाँ।)

आयत 55. बाइबल के शब्द के वर्णनकर्ता अक्सर उस सुगमता से कुंठित और यहाँ तक कि चकित हो जाते हैं जिसके साथ पौलुस और नए नियम के अन्य लेखकों ने पुराने नियम का उद्धरण दिया और इसे मसीह के द्वारा परमेश्वर की इच्छा के पूरे करने पर लागू किया। प्रेरित का होशे का उद्धरण कोई अपवाद नहीं है। 1 कुरिन्थियों 15:55 का उद्धरण अक्षरशः नहीं है। NASB होशे 13:14 में सम्बद्ध पंक्तियों का अनुवाद इस प्रकार करती है, "हे मृत्यु, तेरे सींग कहाँ हैं? हे अधोलोक तेरा डंक कहाँ है?" परमेश्वर का एप्रेम से सम्बन्ध होशे का विषय था, परन्तु प्रेरित में इतना साहस था कि वह भविष्यद्वक्ता की भाषा का उपयोग उन लोगों के जय घोष को व्यक्त करने के लिए करे जो मसीह यीशु प्रभु के द्वारा मृत्यु पर जय प्राप्त करते हैं।

प्रेरित ने मृत्यु और कब्र का मानवीकरण किया ताकि वह उनका उपहास कर सके। वह मृत्यु से कह रहा था, "तू कहाँ रही," "अब परमेश्वर के पुत्र ने मानवता को परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान कर दिया है?" युगों से, मृत्यु जीवन के लिए एक अनिवार्य अंत थी। पौलुस ने होशे के शब्दों को यह कहने के लिए इस्तेमाल किया कि, "मृत्यु, तेरे पास, कोई जय नहीं रही और न ही डंक रहा। मसीह में जीवन हमारा है।"

सम्पूर्ण रूप से, पौलुस 1 कुरिन्थियों में समस्याओं का सामना कर रहा था। वह आन्तरिक विवाद, नैतिक अस्थिरता, और अपना मार्ग खोज रहे सैद्धांतिक भ्रम से ग्रसित कलीसिया की सहायता करने का प्रयास कर रहा था। इसके अधिकतर भाग में, उसने बड़े सैद्धांतिक सूत्रीकरण में जाने का जोखिम उठाने से परहेज़ किया जो उसके लेखों की विशेषताएं हैं; परन्तु वहाँ सिद्धान्त हैं, और धरातल से दूर नहीं हैं। प्रेरित ने व्यवहारिक, नैतिक, व्यवस्थित और बाइबल आधारित धर्मशास्त्र में छोटा सा भेद भी बाद के मसीहियों के कार्य करने के लिए

नहीं छोड़ा। नैतिकता और सिद्धान्त दो अलग मार्ग नहीं हैं जिन्हें अवसर की मांग पर अलग किया या जोड़ा जा सकता है; उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

आयत 56. रोमियों 4-7 में, पौलुस ने व्यवस्था की के तात्पर्य और "विश्वास की आज्ञाकारिता" का विकास मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह पूर्ण उपहार के लिए किया (देखें रोमियों 1:5; 16:26)। जो उसने रोम की कलीसिया को लिखा, वह सम्भवतः चार या पाँच वर्षों के बाद एकदम सटीक बैठता है, जब कुरिन्थ में शीतकाल था (देखें प्रेरितों 20:2, 3)। यह पौलुस की विशिष्टता ही थी जिसमें होशे 13:14 का अनुसरण किया गया था कि **मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है**। सभी सम्भावनाओं में, पौलुस के पाप और व्यवस्था के विषय में सभी कथनों में उसके उनके साथ रहने के समय क्रम के दौरान कुरिन्थ के मसीहियों ने इसे बार-बार सुना था (प्रेरितों 18:11)। यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के माध्यम से, पाप के दांत उखाड़ दिए थे और उसे इसके डंक से वंचित कर दिया था; उसने व्यवस्था को परमेश्वर के अनुग्रह पूर्ण उपहार से पलट दिया था।

आयत 57. सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की फल के माध्यम से, पाप और मृत्यु और व्यवस्था को उन तरीकों से देखा जा सकता था जो प्रभु के आने से पहले अज्ञात थे। परमेश्वर ने मसीहियों को जय प्रदान की है। यह एक ऐसी जय है जो विश्वास के द्वारा, **हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से आती है** (देखें 1 यूहन्ना 5:4)। अपने जीवन के बाद के समय में, ऑगस्टीन ने विश्वासयोग्य लोगों के द्वारा सामना की जाने वाली परीक्षाओं के विषय में लिखा। अंत में, उसने 1 कुरिन्थियों के इस वाक्यांश का उद्धरण दिया और कहा कि हमारे पापों के मध्य कई बार "हमारी शक्ति के द्वारा एक जय को सुरक्षित करने की आशा, या सुरक्षित हो जाने पर अपनी शक्ति को इसका श्रेय देना, उसकी दया को श्रेय न देना ..." होता है।[42] तो जब तक विश्वासी विश्वास की आज्ञाकारिता में मनुष्य की ज़िम्मेदारियों को नहीं भूलता, धर्म शास्त्री का तर्क वैध है।

मसीही की आशा सुरक्षित हैं क्योंकि मसीह ने मरे हुओं से पुनरुत्थान का एक दैहिक अनुभव किया है और, इसके परिणाम स्वरूप एक सामान्य पुनरुत्थान होगा। मसीह की खाली कब्र के बिना, क्रूस की विजय खोखली ठहरेगी। मसीही विश्वास की मूल धारणा से कि सभी विश्वासी उसके साथ सदा जीवित रहेंगे जो दैहिक पुनरुत्थान का पहला फल था कुरिन्थियों के लिए पीठ फेर लेना अकल्पनीय था। यह संसार, इसकी सारी अनिश्चितता, दोष, और पीड़ा, अनन्त जीवन की आशा के साथ सहनीय है।

निष्कर्ष (15:58)

[58]इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

आयत 58. पौलुस ने दैहिक पुनरुत्थान की अपनी शिक्षा को जीवन के लिए इसके आशय की ओर मुड़ते हुए समाप्त किया। क्योंकि पुनरुत्थान निश्चित है, पौलुस ने अपने पाठकों से मसीह के प्रति नई विश्वासयोग्यता की ओर जाने का आग्रह किया। नए नियम का स्वर्ग और नरक का सिद्धान्त, जो प्रभु के वापस आने का विचार है, वह अपने नैतिक और पाप-स्वीकृति के अनुप्रयोग में मसीही जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। यद्यपि आज्ञाकारी विश्वासी विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए जाते हैं, हमारी यात्री की स्थिति में, हमें **प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाना चाहिए।** हमें इसलिए बढ़ना है क्योंकि हम जानते हैं कि **प्रभु में हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।** हमें यह जानकर परिश्रम करना चाहिए कि हम में से प्रत्येक एक स्वर्गीय देह का दावा करने के लिए उठ खड़ा होगा और प्रभु के साथ अनन्तकाल तक राज्य करेगा।

पौलुस ने विश्वासियों से एक उच्च नैतिक क्षेत्र में जीने और मसीह में विश्वासयोग्यता से कार्य करने का आग्रह किया। अनुग्रह के द्वारा विश्वास के माध्यम से उद्धार भले कामों या भरपूर परिश्रमों को हतोत्साहित करने वाला नहीं है। क्योंकि परमेश्वर अनुग्रहकारी है, तो राज्य में विश्वासयोग्य मज़दूर सबसे अधिक आवश्यक हैं, ताकि अन्य लोगों को भी उसके अनुग्रह में लाया जा सके।

अनुप्रयोग

किस प्रकार की देह?

सदियों से, संशयवादियों ने मसीहियों का उनके दैहिक पुनरुत्थान में विश्वास के कारण उपहास किया है। उपहास करने वालों ने इस प्रकार परिस्थितियों को खड़ा किया है:

> एक मनुष्य एक सेब खाता है। उसकी देह फल को पचा लेती है, और इसके अणु और परमाणु उसकी समस्त देह में बिखर जाते हैं। शीघ्र ही वह मर जाता है और उसे दफ़ना दिया जाता है। और कुछ ही समय के बाद, उसके गाड़े जाने का स्थान भुला दिया जाता है और कोई उसकी सड़ चुकी लाश के एकदम ऊपर एक सेब का पेड़ लगा देता है। जड़ भूमि में पहुँचती है और पेड़ को जैविक तत्वों के द्वारा खाद दी जाती है। मृत व्यक्ति की देह से अणुओं और परमाणुओं को लेकर नई सेबों के रूप में बदल दिया जाता है और उन्हें अन्य लोगों के द्वारा खा लिया जाता है। एक समय के अन्तराल में, वही तत्त्व, इस कारण से दो भिन्न देहों का भाग बन चुके हैं।

कहानी में भिन्नताएं अंतहीन हैं, परन्तु अंतिम प्रश्न वही है: पुनरुत्थान में, किसकी देह उन अणुओं और परमाणुओं का दावा करेगी जो एक से अधिक देहों का भाग बन चुके हैं?

आधुनिक सन्देहवादी उन्हीं आपत्तियों को उठाना जारी रखे हुए हैं जो यूनानियों ने पौलुस के लिए प्रस्तुत की थीं। "मुर्दे किस प्रकार जी उठते हैं? और वे

किस प्रकार की देह के साथ आते हैं?" (15:35)। पौलुस की प्रतिक्रिया प्राचीन संसार और आधुनिक संसार दोनों के लिए पर्याप्त थी। उसने कहा, कि वे प्रश्न, अप्रासंगिक थे। जब सदूकियों ने यीशु को इसे समझाने की चुनौती दी कि पुनरुत्थान के समय बातें कैसी होंगी, तो प्रभु का उत्तर भी इसी के समान था: यीशु ने कहा, "तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते, इसी कारण तुम भूल में पड़े हो" (मत्ती 22:29)।

पौलुस ने इस बात को स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार की देहों की रचना की है: उसने उन्हें अलग-अलग प्रकार की महिमा के साथ बनाया है (1 कुरिन्थियों 15:35-41)। प्रेरित ने पुनरुत्थान की देह के स्वभाव के विषय में कुछ सूचनाएँ दीं परन्तु उसने स्पष्ट रूप से यह कहा: "माँस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते" (15:50)। तो यह कहना सुरक्षित होगा कि आने वाले युग में विश्वासियों की देह जीवन की अनन्त शक्तियों के साथ इस प्रकार एकीकृत होगी कि एकता सिद्ध और पूर्ण होगी। परमेश्वर परमाणु और अणुओं तक सीमित नहीं जो एक पार्थिव जीवन का निर्माण करने वाले खांचे हैं। *परमेश्वर के लोगों की विरासत इस प्रकार का एक दैहिक जीवन होगा जिसे परमेश्वर स्वर्गीय अस्तित्व के लिए रचेगा।* यद्यपि स्वर्गीय जीवन की इस संसार के जीवन के साथ चेतना में निरन्तरता होगी और हो सकता है रूप में भी, यह निश्चित है कि स्वर्गीय देह को वर्तमान युग के माँस और लहू से नहीं बनाया जाएगा।

मृत्यु के बाद जीवन

पुरातत्वेत्ता उनके दफ़नाने के रीति रिवाज़ों के परीक्षण के द्वारा बड़ा अंश सीखते हैं। कुछ समय पहले *पुरातत्व विज्ञान* (सितम्बर/अक्तूबर 1997) ने स्काईथियन लोगों को एक लेख समर्पित किया, ऐसे प्राचीन लोग जो काले सागर के उत्तर में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक रहते थे।[43] मुख्य सरदारों में से एक की कब्र की खुदाई की जा चुकी है। उसे एक कमरे में आभूषणों, हथियारों, भोजन, और जिन बातों को आने वाले जीवन के लिए आवश्यक समझा जाता था उनके साथ दफ़नाया गया था। उस महान व्यक्ति के मुख्य सलाहकार को गला घोंटकर उसके साथ दफ़ना दिया गया था। यहाँ तक कि उसके घोड़े को भी घात किया गया था और उसी दफ़नाने के स्तूप में रख दिया गया था। उसकी कब्र के निकट ही एक कब्र में महत्वपूर्ण महिला की देह रखी हुई थी, सम्भवतः वह उसकी पत्नी थी। उसके पास भी, जीवन की सभी सामग्री थीं। उसकी दासी लड़की, एक युवती को भी गला घोटकर उसके साथ कब्र में रख दिया गया था।

स्काईथियन लोग ही केवल वे लोग नहीं थे जो मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करते थे। मिस्र के पिरामिड और राजाओं की घाटियाँ उन प्रयत्नों की गवाह हैं जो प्राचीन लोगों ने मृत्यु के बाद के जीवन की आशा में किए थे। स्काईथियन और मिस्री के समान, मसीही भी इस जीवन के परे एक जीवन की आशा रखते हैं। मसीहियों की आशा किस प्रकार भिन्न है? क्या इसका आधार

अन्य लोगों की तुलना में अधिक मज़बूत है? बाइबल कोई और ऐसा स्थान नहीं है जहाँ लेखक ने पुनरुत्थान के विषय में उतने विस्तार से लिखा हो जितना पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15 में लिखा था।

पौलुस के अनुसार, यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के सन्दर्भ के सिवा मृत्यु के बाद जीवन की कोई बात नहीं हो सकती। उसने लिखा "परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है," (15:20)। उस सुसमाचार के संदेश के अनुसार जिसकी घोषणा उसने की पवित्रशास्त्र और इतिहास प्रभु की मृत्यु, दफ़नाए जाने, और पुनरुत्थान के आसपास घूमता है (15:3, 4)। यद्यपि सभी तीनों पुष्टीकरण सुसमाचार के लिए मूल हैं, कुरिन्थ में केवल पुनरुत्थान ही विवादों में था। इस कारण, पौलुस ने यीशु के गवाहों पर प्रकट होने का वर्णन किया, जिनमें से कुछ उस समय जीवित थे जब पौलुस ने यह लिखा (15:5-8)। खाली कब्र के तथ्य और यीशु का गवाहों को दिखाई देना इतने केन्द्रीय हैं कि यह विषय नए नियम में कभी भी ओझल नहीं होता। यह एक मूलभूत तथ्य है जिससे यीशु के ईश्वरत्व के अभी दावे उत्पन्न होते हैं:

> "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं" (प्रेरितों 2:32)।
>
> "और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं।" (प्रेरितों 3:15)
>
> "परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं।" (प्रेरितों 13:30-31)

पौलुस के पत्रों में, ज़ोर देना भिन्न नहीं है: 1 कुरिन्थियों 15 केवल वह शब्द नहीं है जहाँ पौलुस ने यीशु और उसके मृतकों में से जी उठने की घोषणा की। रोमियों 1:4 में उसने लिखा, "और [यीशु] पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ, यीशु मसीह हमारा प्रभु, परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" सुसमाचार के विवरणों में लूका और यूहन्ना के पास पुनरुत्थान के विषय में कहने के लिए अधिक था। लूका ने बताया कि किस प्रकार स्त्रियाँ सप्ताह के पहले दिन भोर के समय कब्र पर गईं और उसे खाली पाया। वहाँ पर दो स्वर्गदूत थे, उनमें से एक ने स्त्रियों से पूछा की वे जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूँढ रही थीं (लूका 24:1-5)। सुसमाचार प्रचारक ने दो मनुष्यों के बारे में बात की जो उसी दिन इम्माऊस के मार्ग पर थे। यीशु उनके साथ हो लिया, उनसे बातें कीं, और उनकी उपस्थिति से ओझल हो गया(लूका 24:13-31)। यूहन्ना ने एक घटना का वर्णन किया जब प्रभु अपने शिष्यों में से कुछ के ऊपर गलील की झील के किनारे प्रकट हुआ था (यूहन्ना 21:1-14; NIV)।

भूतकाल की किसी घटना के विषय में जानने का एकमात्र उपाय उन गवाहों के द्वारा है जो उस घटना के दौरान जीवित थे और उन्होंने इसका वर्णन भविष्य

की पीढ़ियों के लिए किया। सूचनाओं की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर करती है कि गवाह किस प्रकार के लोग थे, उनकी तथ्यों तक पहुँच, उन्होंने अफ़वाहों के विपरीत वास्तव में क्या देखा था, जो उन्होंने देखा था उसे बताने के उनके कौन से गुप्त उद्देश्य थे। किसी भी मापदंड के अनुसार, यीशु मसीह का जी उठना इतिहास कि घटनाओं में अत्यधिक सुरक्षित रूप से प्रमाणित है।

समाप्ति नोट्स

[1]होमर *दि ओडीसी* 11. लगभग पूरा ग्यारहवीं किताब मुरदों के संसार से सामना करने का वर्णन करता है। [2]बेन विदरिंगटन तृतीय, *कॉफ्लिक्ट एण्ड कम्युनीटी इन कोरिंथः ए सोसियो-रिटोरिकल कमेंट्री आन 1 एण्ड 2 कोरिंथियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मीशिगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1995), 299. [3]गेरहार्ड फ़ोन रॉड के अनुसार व्यवस्थाविवरण 26:5-9 इस्राइली लोगों का प्राथमिक सैद्धान्तिक अभिव्यक्ति था। उन्होंने इसे इस्राएल के लोगों का "सिद्धान्त और विश्वास" कहा (गेरहार्ड फ़ोन रॉड, *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलोजी,* वॉल्यूम 1, *द थियोलोजी आफ इस्राएल्स हिस्टोरिकल ट्रेडीशन्स,* अनुवादक डी. एम. जी. स्टॉल्कर [लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2001], 121-22). [4]इस प्रकार का व्याख्या विली मार्क्सेन, "स्टडी टूः द ज्योग्राफिकल आउटलाइन," *मार्क द एवांजेलिस्टः स्टडीज़ आन द रिडैक्शन हिस्ट्री ऑफ़ द गॉस्पल,* अनुवादक जेम्स बॉयस, डोनाल्ड जूएल, विलियम पोलमैन, और रॉय ए. हैरिसविल (नैशविलः अबिंगदोन प्रेस, 1969), 66-95 में पाया जाता है। [5]जोहान्नेस सनैडर, "ἔκτρωμα," *थियोलोजिकल डिक्शनरी आफ द न्यू टेस्टामेंट*, सम्पादक गेरहार्ड किट्टल, अनुवादक एंव सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1964), 2:465. [6]एफ़. एफ़. ब्रूस, *पौलः अपौसल ऑफ़ द हार्ट सेट फ्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1977), 463. [7]"द गैस्पल ऑफ़ फ़िल्लिप (II, 3)," ट्रांस. वैस्ली डब्ल्यू. आईसेंबर्ग *द नैग हम्मादी लाइब्रेरी* में, जेम्स रॉबिन्सन, डिर. (न्यू यॉर्कः हार्पर और रो, 1977), 144. [8]ज्ञानवाद एक प्रारंभिक विधर्म था जिसने प्रथम शताब्दी ऐ.डी. के दूसरे भाग में कुछ कलीसियाओं को विचलित किया था। कुछ ज्ञानवादी यीशु के वास्तविक मनुष्यत्व का खंडन करते थे, जबकि अन्य उसके ईश्वरत्व का खंडन करते थे। विश्वासों के इस मिश्रण से अनेकों विचार, त्याग-तपस्या (शरीर को वंचित रखना) से लेकर भोगी (शरीर की लालसाओं को पूरा करना) होने तक निकल कर आए। सभी ज्ञान पंथों में एक बात सामान्य थी: वे सभी किसी गुप्त ज्ञान *(ग्नोसिस)* द्वारा, जिसके लिए वे दावा करते थे कि उसे केवल उन्हीं पर प्रकट किया गया है, उद्धार का आश्वासन देते थे। [9]जे. ग्रेशम माकेन, *द ऑरिजन ऑफ़ पॉल्स रिलीजन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1947), 275-76. [10]विलियम एफ़. और्र एण्ड जेम्स आर्थर वौल्थर, *1 कोरिन्थियंस*, द ऐंकर बाइबल (गार्डन सिटी, एन.वाए.: दबलडे एण्ड & कंपनी, 1976), 325.

[11]जॉर्ज एल्डन लैड्डु, *ए थियोलॉजी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1974), 316. [12]वार्ड एस. चाइलड्स, *बिबलिकल थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट्स: थियोलौजिकल रिफ़लेक्शन ऑन द क्रिश्चियन बाइबल* (मिन्नियापोलिसः फोर्ट्रेस प्रैस, 1992), 580. [13]एवरेट फर्ग्यूसन, *बैकग्राऊँड्स ऑफ़ अर्ली क्रिश्चियनिटी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1987), 195. [14]रॉनल्ड एच. नैश, *क्रिश्चियनिटी एण्ड द हैलिनिस्टिक वर्ल्ड* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: जौन्डर्वैन पबलिशिंग हाउस, 1984), 70. [15]एलेक्जेंडर बल्मैन ब्रूस, *अपौलोजेटिक्स*, इंटरनैशनल थियोलौजिकल लाईब्रेरी (न्यू यॉर्कः चार्ल्स स्क्रिबनर्स सन्स, 1892), 246. [16]पूर्वोक्त. [17]लैड्डु, 326. [18]पूर्वोक्त. [19]ऑगस्टिन *सिटी ऑफ़ गौड* 13.14. [20]पूर्वोक्त.

[21]ऑगस्टिन (ऐ.डी. 354-430) का जन्म तागास्ते में हुआ था, जो प्राचीन कार्थेज(वर्तमान ट्यूनिस) के निकट है। [22]डेविड ई. गार्लैंड, *1 कोरिन्थियंस*, बेकर एक्सेजेटिकल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: बेकर एकेडमिक, 2003), 711. [23]हरमन रिडर्बोस, *पौल: एन आउटलाईन ऑफ़ हिज़ थियोलॉजी*, ट्रांस. जॉन रिचर्ड डीविट्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1975), 25. [24]रिचर्ड डीमारिस ने कुरिन्थ के धार्मिक विचारों की जाँच की संभवतः जिनसे प्रभावित होकर मसीहियों ने मृतकों के लिए बपतिस्मा लिया होगा। (रिचर्ड डीमारिस, "कोरिन्थियन्स, रिलीजन एण्ड बैपटिज़्म फॉर द डेड [1 कुरिन्थियों 15:29]: इन्साईट्स फ्रॉम आर्कियोलॉजी एण्ड एंथ्रोपोलॉजी," *जर्नल ऑफ़ बिबलिकल लिटरेचर* 114 [विन्टर 1995]: 661-82.) [25]गारलैण्ड, 719. [26]इस प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के प्रयोग के प्राचीन उदाहरण एब्राहम मैलहर्बी, "द बीस्ट एट ऐफ़्सस," *जर्नल ऑफ़ बिबलिकल लिट्रेचर* 87 (मार्च 1968): 71-80 में दिए गए हैं। [27]भोगी सुख-विलास और शारीरिक-लालसाओं के पीछे रहने के लिए जीते हैं। [28]वॉल्टर बौअर, *ए ग्रीकइंगलिश लेक्सीकौन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, 3रड एड., रिव. एण्ड एड. फ्रेड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 1090. [29]पूर्वोक्त. [30]गारलैंड, 678.

[31]वेन ग्रुडेम, *सिस्टेमेटिक थियोलॉजी: एन इंट्रोडक्शन टू बिब्लिकल डॉक्ट्रीन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1994), 613. [32]रिचर्ड ई. ऑस्टर, जूनियर, *1 कोरिन्थियन्स*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन, एमओ.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग को., 1995), 398. [33]ऑगस्टीन *सिटी ऑफ़ गॉड* 13.17. [34]गारलैंड, 735. [35]ऑस्टर, 402. [36]रिडरबोस, 76, एन. 110. [37]जॉन मैकरे, *पॉल: हिज़ लाइफ़ एंड टीचिंग* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: बेकर अकैडेमिक, 2003), 419. [38]आर. ई. विंसेट, "जीजस इज़ कमिंग सून", *सोंग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़*, कॉम्प. एंड एड, एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, एल. ए.: हॉवर्ड पब्लिशिंग को., 1994)। [39]जेम्स डी. जी. डन, *द थियोलॉजी ऑफ़ पॉल द अपोस्ल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी, अर्डमनस पब्लिशिंग को. 1998), 78. [40]जोआकीम जेरेमिअस, "फ़्लैश एंड ब्लड कैन नॉट इन्हेरिट द किंगडम ऑफ़ गॉड," *न्यू टेस्टामेंट स्टडीज़* 2 (1955-56): 151-59.

[41]गारलैंड ने यह दावा किया कि जेरिमिअस ने पौलुस के विचारों' का "गलत अनुवाद" किया था। उसने कहा पौलुस सामान्य तौर पर "पर्यायवाची समानांतरता" का उपयोग करने के द्वारा "भौतिक मानव अस्तित्व की परिस्तिथि" के विचार को दोहरा रहा था (गारलैंड, 741)। [42]ऑगस्टीन *सिटी ऑफ़ गॉड* 22.23. [43]जेन चोकोरोस्की एंड सेर्गेई स्कोर्यी, "प्रिंस ऑफ़ थे ग्रेट कुरगन," *अर्कियोलॉजी* 50 (सितम्बर/अक्टूबर 1997): 32-39.